

अभिजीत दीपके, ध्रुव राठी, चार पूर्व मुख्यमंत्रियों समेत सात हजार प्रदर्शनकारी हिरासत में मुख्य निर्वाचन आयुक्त ज्ञानेश कुमार के इस्तीफे की मांग पर बवाल

नई दिल्ली। मुख्य निर्वाचन आयुक्त ज्ञानेश कुमार के इस्तीफे की मांग को लेकर शनिवार को पूरे दिन कर्नाट प्लेस में पुलिस और प्रदर्शनकारी आमने-सामने रहे। कॉकरोच जनता पार्टी (सीजेपी) ने लोगों से जंतर-मंतर पर पहुंचने की अपील की थी। लोगों को जंतर-मंतर तक पहुंचने से रोकने के लिए दिल्ली पुलिस ने अभूतपूर्व सुरक्षा बंदोबस्त किए थे। दिल्ली पुलिस ने किसी भी प्रदर्शनकारी को जंतर-मंतर तक नहीं पहुंचने दिया। दिल्ली पुलिस ने सीजेपी संयोजक अभिजीत दीपके, चार पूर्व मुख्यमंत्रियों और यूट्यूबर ध्रुव राठी समेत सात हजार से अधिक प्रदर्शनकारियों को हिरासत में ले



दास तथा आशुतोष रांका को विमान के भीतर से ही हिरासत में ले लिया। सीजेपी द्वारा शेयर किए गए एक वीडियो में दीपके ने विमान में आए पुलिस अधिकारियों से कहा, हम यहां गिरफ्तार होने आए हैं, आइए और हमें गिरफ्तार कीजिए। दिल्ली पुलिस ने कहा कि सीजेपी के पास जंतर-मंतर

सेक्टर 56 स्थित उनके घर से हिरासत में लिया गया। हिरासत में लिए गए कई नेताओं ने दावा किया कि पुलिस उन्हें घंटों तक वाहनों में इधर-उधर घुमाती रही। सीपीएम महासचिव एम.ए. बेबी, वामपंथी नेता बुंदा करात, सीपीआई (मारे) लिबरेशन के महासचिव दीपांकर भट्टाचार्य, सामाजिक कार्यकर्ता योगेंद्र यादव, वकील प्रशांत भूषण और ऑल इंडिया स्टूडेंट्स एसोसिएशन (आइसा) की अध्यक्ष नेहा बोरा को भी हिरासत में लिया गया। विपक्षी दलों ने इसे आपातकाल से भी बदतर हालात बताया। लोकसभा में विपक्ष के नेता राहुल गांधी ने युवाओं से प्रदर्शन जारी रखने की अपील की और कहा कि

यह सुनिश्चित किया जाएगा कि शासन और संविधान पर हमला करने वाले लोगों को इसकी कीमत चुकानी पड़े। राहुल गांधी 'छात्रों की गुंज' कार्यक्रम में शामिल होने के लिए चेन्नई में थे। दिन में करीब एक बजे इम्तियाज अली मार्ग पर आकाशवाणी भवन के पास बैरिकेड लांघने के बाद कुछ प्रदर्शनकारियों ने सुरक्षाकर्मियों पर पथराव किया जिसमें दो पुलिसकर्म

मुख्यमंत्री ने लाभार्थियों के हाथों से 50 लाख से अधिक खातों में ट्रांसफर करवाए 1,634 करोड़ रुपये



चंडीगढ़। हरियाणा के मुख्यमंत्री श्री नायब सिंह सेनी ने प्रत्येक माह की 10 तारीख को विभिन्न जनकल्याणकारी योजनाओं के पात्र व्यक्तियों को डीबीटी के माध्यम से लाभ राशि भिजवाने के क्रम में शनिवार को चार लाभार्थियों के हाथों से प्रदेश के 50 लाख 46 हजार 624 पात्र लाभार्थियों के बैंक खातों में 1,634 करोड़ 27 लाख रुपये की राशि सीधे हस्तांतरित करवाई। बटन दबाकर लाभराशि का हस्तांतरण करने वाली तीन महिला लाभार्थियों व एक किसान लाभार्थी ने अपने इस अनुभव को यादगार बताते हुए मुख्यमंत्री श्री नायब सिंह सेनी की कार्यप्रणाली की सराहना की। मुख्यमंत्री ने कहा कि प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी की 25 वर्ष की अनवरत राष्ट्र सेवा और इच्छाशक्ति से यह संभव हुआ है कि आज केंद्र सरकार द्वारा भिजवाए गए एक रुपये को डबल इंजन सरकार सवा रुपया करके विकास कार्यों में लगाती है जबकि कांग्रेस राज में ऐसे प्रधानमंत्री भी हुए हैं जो कहते थे कि केंद्र सरकार द्वारा भिजवाए गए एक रुपये में से जमीन तक 15 पैसे ही पहुंचते हैं। उन्होंने कहा कि राज्य सरकार का संकल्प है कि गरीब, किसान, महिला, युवा, बुजुर्ग तथा जरूरतमंद वर्गों को सरकारी योजनाओं का लाभ बिना किसी परेशानी और बिना किसी बिबीलये के सीधे उनके बैंक खातों में मिले। मुख्यमंत्री ने कहा कि डायरेक्ट बेंनिफिट ट्रांसफर (डीबीटी) और परिवार पहचान पत्र आधारित व्यवस्था ने सरकारी योजनाओं में पारदर्शिता को और मजबूत किया है। सरकार ने 'प्रो-

हम आपको चारों तरफ से घेर रहे हैं', राहुल गांधी ने पीएम मोदी, अमित शाह समेत अजित डोगाल पर बोला हमला

नई दिल्ली। दिल्ली में कॉकरोच जनता पार्टी (सीजेपी) की प्रस्तावित विरोध प्रदर्शन के मद्देनजर दिल्ली पुलिस ने 3000 से अधिक लोगों को हिरासत में ले लिया है। इनमें सीजेपी प्रमुख अभिजीत दीपके, प्रवक्ता सौरव दास और आशुतोष रांका का भी नाम शामिल है। इसके अलावा कई राजनेता भी हिरासत में लिए गए हैं, इनमें अरविंद केजरीवाल, ममता बनर्जी समेत कई नेता शामिल हैं। इसे लेकर लोकसभा के नेता प्रतिपक्ष राहुल गांधी ने केंद्र सरकार और संघ के खिलाफ हमला बोला है। राहुल गांधी ने एक्स पर वीडियो पोस्ट कर कहा, मैं नरेंद्र मोदी, संघ और इनसे जुड़े लोगों के खिलाफ एक दशक से भी अधिक समय से लड़ रहा हूं। मैं अपने विरोधियों को उतनी अच्छी तरह समझता हूं, जितना कोई भी अपने प्रतिद्वंदी को समझता है। मैं इन्हें भीतर तक जानता हूं, इनकी हर चाल से वाकिफ हूं। आगे लिखा, इन लोगों की सबसे बड़ी पहचान है- कायरता। नरेंद्र मोदी, अमित शाह, मोहन भागवत, ज्ञानेश कुमार, अजीत डोगाल- इस कहानी के खलनायक अब धीरे-धीरे घिरते जा रहे हैं। इनके चारों तरफ से दायरा सिमट रहा है। जो करना है, कर लीजिए। जिन्हीं पुलिस बुलानी है, बुला लीजिए- 10 हजार, 20 हजार, 50 हजार, जितनी चाहें बुला लीजिए। लोकसभा में नेता विपक्ष राहुल गांधी शनिवार को चेन्नई दौरे पर हैं और वह छात्रों की गुंज कार्यक्रम में शामिल होंगे। हालांकि इस कार्यक्रम से पहले राहुल गांधी तमिलनाडु के मुख्यमंत्री विजय के साथ लंच में शामिल हुए। राहुल गांधी दोपहर करीब 12.30 बजे चेन्नई एयरपोर्ट पहुंचे और विजय के नीलांकरई घर गए, जहां दोनों नेताओं का दोपहर 1.30 बजे लंच पर मिलना तय था। शाम 5 बजे राहुल गांधी आइलैंड ग्राउंड्स में छात्रों की गुंज को संबोधित करेंगे। यह इवेंट परीक्षाओं, पढ़ाई के खर्च, बेरोजगारी और युवाओं की दूसरी वित्ताओं पर केंद्रित होगा।

ऊर्जा मंत्री अनिल विज का कांग्रेस और विदेशी ताकतों पर तीखा हमला, कहा- देश में अराजकता फैलाना चाहती है कांग्रेस

चंडीगढ़। हरियाणा के ऊर्जा, परिवहन एवं श्रम मंत्री अनिल विज ने दिल्ली में कॉकरोच जनता पार्टी के प्रदर्शन के दौरान बने लॉकडाउन जैसे हालातों पर तीखी प्रतिक्रिया दी है। उन्होंने कई शब्दों में कहा कि देश के विकास को रोकने और यहां अराजकता फैलाने के लिए कुछ नेताओं, पार्टियों और लोगों ने दुरश्मन विदेशी ताकतों से सुपारी ले रखी है, क्योंकि वे तर्कसंगत बात करने के बजाय माहौल बिगाड़ना चाहते हैं। प्रदर्शन करने का हक, लेकिन कानून की पालना जरूरी पत्रकारों से बातचीत के दौरान मंत्री अनिल विज ने स्पष्ट किया कि देश में प्रदर्शन करना हर नागरिक का अधिकार है, लेकिन साथ ही कानून की पालना करना भी उतना ही अनिवार्य है। उच्चतम न्यायालय की गाइडलाइन उन्होंने कहा कि माननीय उच्चतम न्यायालय के निर्देशानुसार, किसी भी प्रदर्शन से कम से कम 10 दिन पहले नोटिस देना होता है ताकि सरकार आवश्यक व्यवस्था कर सके और आम जनता को परेशानी न हो। आम नागरिकों के अधिकार बिना पर्याप्त

दिल्ली के झंडेवालान में हिरासत में लिए गए सीजेपी प्रदर्शनकारियों को ले जा रही बस पर पत्थर फेंके गए

नई दिल्ली। शनिवार को नई दिल्ली के झंडेवालान इलाके में हिरासत में लिए गए लोगों को ले जा रही बस पर पत्थर फेंके गए। पुलिस ने जंतर-मंतर के पास कॉकरोच जनता पार्टी (सीजेपी) के प्रस्तावित विरोध प्रदर्शन के लिए आ रहे लोगों को हिरासत में लेना जारी रखा।

अधिकारियों के अनुसार, यह घटना तब हुई जब पुलिसकर्मों कुछ प्रदर्शनकारियों ने कथित तौर पर पुलिस हिरासत से भागने की कोशिश की और बस को नुकसान पहुंचाने का प्रयास किया। हालांकि, पुलिस ने उन्हें फिर से हिरासत में ले लिया और बाद में उन्हें निर्धारित स्थान पर भेज दिया। इस बीच, पुलिस ने शनिवार को ऊहापोह करने के बाद भी जनता ने उन्हें करारी शिकस्त दी है। इस चुनाव में कांग्रेस का खाता भी नहीं खुला और पनडीए ने चार सीटें जीतकर यह साबित कर दिया कि देश की जनता प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी और भाजपा के साथ खड़ी है।

मद्देनजर राष्ट्रीय राजधानी क्षेत्र (एनसीआर) में सुरक्षा बढ़ा दी गई है। अधिकारियों ने कानून व्यवस्था बनाए रखने और प्रदर्शनकारियों को जंतर-मंतर स्थित निर्धारित स्थल तक पहुंचने से रोकने के लिए अतिरिक्त इंतजाम किए हैं। पुलिस ने शुक्रवार को बताया कि कॉकरोच जनता पार्टी (सीजेपी) के विरोध प्रदर्शन की अनुमति आयोजकों द्वारा कानूनी निर्देशों और पहले के विरोध प्रदर्शन के दौरान दिए गए अपने वचनों का पालन न करने के कारण रद्द कर दी गई है। जंतर-मंतर पर होने वाले विरोध प्रदर्शन से पहले इंदिरा गांधी अंतरराष्ट्रीय हवाई अड्डे (आईजीआईए) पर पहुंचते ही सीजेपी के संस्थापक अभिजीत दीपके, सीजेपी के प्रवक्ता सीरंभ दास और आशुतोष रांका को हिरासत में ले लिया गया।

शोशल मीडिया इन्फ्लुएंसर ध्रुव राठी को भी गुरुग्राम स्थित उनके आवास से हिरासत में लिया गया। सीजेपी के फेसबुक हैंडल पर एक पोस्ट के अनुसार, लगभग 50 सारक कपड़ों में पुलिसकर्मों सुबह करीब 8 बजे राठी के गुरुग्राम स्थित आवास पर पहुंचे और उन्हें हिरासत में ले लिया।

तुषार गांधी, एक्टर इमरान खान समेत सैकड़ों प्रदर्शनकारी हिरासत में, दिल्ली के बाद मुंबई में पुलिस का एवशन

नई दिल्ली। इधर दिल्ली पुलिस ने शनिवार सुबह कॉकरोच जनता पार्टी के फाउंडर अभिजीत दीपके को दिल्ली एयरपोर्ट से हिरासत में ले लिए, उधर मुंबई पुलिस ने अगस्त क्रांति मैदान को सील कर दिया। यहीं प्रदर्शनकारियों ने सीजेपी के जंतर-मंतर प्रदर्शन के समर्थन में जमा होने की योजना बनाई थी। शाम तक नाना चौक पर सैकड़ों लोगों को हिरासत में ले लिया गया था। 1942 में 'भारत छोड़ो आंदोलन' की शुरुआत जिस मैदान से हुई थी, वह अब बैरिकेड्स की तीन लेयर और 500 से अधिक पुलिसकर्मों के घेरे के पीछे खाली रह रहा था। यह कॉल महान्या गांधी के पड़पोते और 'हम भारत के लोग' के अध्यक्ष तुषार गांधी ने बुलाई थी। उन्होंने शुक्रवार को एक्स पर एक पोस्ट कर मुंबई के लोगों के अपील की थी कि वे मुख्य चुनाव आयुक्त ज्ञानेश कुमार के इस्तीफे की सीजेपी की मांग

तीन लेयर में बैरिकेड लगाए थे, जो एक-दूसरे से लगभग 100 मीटर की दूरी पर थे। हर बैरिकेड पर करीब 50 पुलिसकर्मों तैनात थे, जो पैदल चलने वालों को रोककर उनसे पूछताछ कर रहे थे और ट्रैफिक का रास्ता बदल रहे थे। आखिरी बैरिकेड नाना चौक पर था। वहीं पर प्रदर्शनकारी ज्ञानेश कुमार के इस्तीफे की मांग कर रहे थे और उन्हें करीब छह पुलिस दैने में भरकर नजदीकी पुलिस थानों में ले जाया गया। मलाड से आई 17 साल की फलक शेख ने कहा, कॉलेज में हमारा पॉलिटेक्नल सहायका एग्जाम था। हमने जल्दी-जल्दी अपने पेपर खत्म किए और विरोध प्रदर्शन में शामिल होने के लिए यहीं आ गई। जब हम स्टेशन पहुंचीं, तो देखा कि हर कुछ मीटर पर पुलिस तैनात थी। जब हम अगस्त क्रांति मैदान के एंटी गेट के पास पहुंचीं, तो एक पुलिस अधिकारी ने हमें रोक

लिया और हमारे कॉलेज और हम कहीं से आई हैं, इसके बारे में पूछने लगा। साथ ही, हमें हिरासत में लेने के लिए महिला अफसरों को बुलाने की धमकी भी दी। उनकी दोस्त जोया शेख ने बताया कि वे पहले भी CJP के शिवाजी पार्क वाले विरोध प्रदर्शन में शामिल हो चुकी थीं, लेकिन शनिवार को सुरक्षा इंतजाम कहीं अधिक सख्त थे। ठाणे से आई लता तेंदुलकर ने कहा कि जब पुलिस ने उन्हें हिरासत में लेने की कोशिश की, तो उन्हें चोट लगी। अपने हाथ पर खरोंब दिखाते हुए उन्होंने कहा, हम बस उन सज्जह के पास खड़े थे, तभी पुलिस ने प्रदर्शनकारियों को हिरासत में लेना शुरू कर दिया। जब हमने रिकॉर्डिंग शुरू की, तो कुछ महिला अधिकारी आईं और हमें खींचने लगीं। हमने इसका विरोध किया और पूछा कि सिर्फ खड़े रहने पर हमें हिरासत में कैसे लिया जा सकता है।

दिलजीत दोसांझ के घर के पास खालिस्तान के समर्थन वाले नारे, जांच में जुटी पुलिस

नई दिल्ली। पंजाबी सिंघर और एक्टर दिलजीत दोसांझ के पंजाब के दोसांझ कलां गांव स्थित उनके घर के पास एक दीवार पर खालिस्तान का समर्थन करने वाले विवादित नारे लिखे गए। एक रिपोर्ट के मुताबिक, वह कुछ ही दिनों में भारत में ऑरॉ इंडिया टूर 2026 की शुरुआत करने वाले हैं। इससे पहले ये नारे गांव के ही रहने वाले मुख्तियार की दीवार पर लिखे गए थे। मुख्तियार का कहना है कि जिन लोगों ने ऐसा किया हो सकता है कि उन्होंने गलती से उनके घर को दिलजीत दोसांझ का घर समझ लिया हो। ड्राइवर का काम करने वाले मुख्तियार ने बताया कि उन्हें रात करीब 1:30 बजे अपने घर के बाहर स्प्र पेन्ट की गंध आई। जब वे यह देखने के लिए बाहर निकले कि वहां कौन है तो उन्होंने चार लोगों को दीवार पर नारे लिखते हुए देखा। मुख्तियार ने कहा कि उन्होंने उनकी इस हरकत पर आपत्ति जताई, लेकिन वे लोग तुरंत भाग गए। उन्होंने बताया कि उनका घर दिलजीत के घर से थोड़ी ही दूरी पर है और हो सकता है कि उन लोगों ने गलती से उनके घर को सिंघर का घर समझ लिया हो। इस घटना के बाद गोराया पुलिस के असिस्टेंट सब-इंस्पेक्टर हरभजन सिंह मौके पर पहुंचे। खबरों के मुताबिक, पुलिस ने कहा कि आसपास के इलाकों के CCTV फुटेज जांचे जाएंगे। इसमें शामिल लोगों की पहचान की जाएगी। पुलिस ने यह भी कहा कि कानून के मुताबिक उचित कानूनी कार्रवाई की जाएगी। दिलजीत दोसांझ भारत में अपना ऑरॉ टूर शुरू करने की तैयारी कर हैं। वह एक नवंबर को दिल्ली-NCR से इसकी शुरुआत करेंगे। इसके बाद वे इंदौर, अहमदाबाद, मुंबई, बेंगलुरु और लखनऊ जैसे कई अन्य शहरों में भी परफॉर्म करेंगे। चंडीगढ़ में भी एक कॉन्सर्ट की घोषणा की गई है। यह टूर उनके ऑरॉ वर्ल्ड टूर के तहत हुए इंटरनेशनल परफॉर्मेंस के बाद हो रहा है।

संपादकीय (उमेश कुमार तिवारी)

चुनाव आयोग की पारदर्शिता पर सवाल

भारत के मुख्य निर्वाचन आयुक्त के खिलाफ विपक्षी दलों द्वारा राजधानी दिल्ली में मार्च और धरना-प्रदर्शन ने एक बार फिर चुनाव आयोग की कार्य-प्रणाली, चुनावी पारदर्शिता और लोकतांत्रिक संस्थाओं की स्वायत्तता को राष्ट्रीय बहस के केंद्र में ला दिया है। सर्वोच्च न्यायालय की टिप्पणी के बाद यह मामला बेहद गंभीर व पेचीदा होता जा रहा है। विपक्ष का कहना है कि चुनाव आयोग से जुड़े कुछ फैसलों और प्रक्रियाओं को लेकर राजनीतिक द लों व मतदाताओं के बीच संदेह पैदा हुआ है। दूसरी ओर निर्वाचन आयोग का पक्ष है कि वह सांविधानिक संस्था है और उसकी कार्यप्रणाली निर्धारित कानूनों, नियमों और सांविधानिक प्रावधानों के अनुरूप चलती है। इसलिए इस पूरे विवाद को आरोप-प्रत्यारोप के बजाय प्रमाण, कानून और पारदर्शिता की नजरों से देखना आवश्यक है। अच्छ यही होगा कि विपक्ष की मांगों को केवल राजनीतिक विरोध के रूप में देखने के बजाय लोकतांत्रिक संवाद का अवसर माना जाए। आज सवाल किसी एक पक्ष की जीत या हार का नहीं, बल्कि जनता के विश्वास को मजबूत करने का है। विपक्ष की शिकायतें सुनी जानी चाहिए, चुनाव आयोग को पारदर्शिता के साथ जवाब देना चाहिए, विपक्ष को प्रमाण आधारित राजनीति करनी चाहिए और पुलिस-प्रशासन को कानून के साथ-साथ नागरिक अधिकारों का संतुलन बनाए रखना चाहिए। यदि इन चारों स्तरों पर संयम और संवाद कायम रहता है, तो वर्तमान विवाद लोकतांत्रिक व्यवस्था को कमजोर करने के बजाय उसे और अधिक जवाबदेह, पारदर्शी और मजबूत बनाने का अवसर बन सकता है। क्या ऐसा हो सकेगा हाल के घटनाक्रमों से चुनाव आयोग की साख पर सवाल उठने लगे हैं। कुछ लोग इसे राजनीतिक आरोप बता रहे हैं, लेकिन मामला सिर्फ इतना नहीं है। लोकतंत्र में निर्वाचन आयोग की निष्पक्षता सबसे अहम मानी जाती है। ऐसा इसलिए भी, क्योंकि चुनावी प्रक्रिया पर भरोसा इसी संस्था के कामकाज से जमता है। किंतु हाल के वर्षों में जिस तरह मतदाता सूची में गड़बड़, मतदाता का नाम हटने, चुनाव कार्यक्रम और प्रक्रिया को लेकर सवाल उठे हैं, उससे आयोग के कामकाज पर बहस तेज हो गई है। इसने आयोग के कामकाज में पारदर्शिता बढ़ाने की मांग करने पर मजबूर किया है। ऐसे में, चुनाव संबंधी शिकायतों का समयबद्ध निपटारा, आंकड़ों और निर्णयों में पारदर्शिता व दलों के सवालों का स्पष्ट जवाब आयोग की विश्वसनीयता मजबूत कर सकता है। भारत के चुनाव आयोग की साख देश के भीतर ही नहीं, अंतरराष्ट्रीय स्तर पर भी है। दुनिया के सबसे बड़े लोकतांत्रिक चुनावों को लगातार संचालित करने का उसका अनुभव दूसरे देशों के चुनाव प्रबंधन संस्थानों के लिए भी महत्वपूर्ण माना जाता है। यह बात केवल तथ्यों से नहीं, बल्कि आयोग की अंतरराष्ट्रीय भूमिका और दूसरे देशों के साथ उसके संस्थागत सहयोग से भी स्पष्ट होती है। गौरतलब है कि भारत का निर्वाचन आयोग ‘एसोसिएशन ऑफ वर्ल्ड इलेक्शन बॉडीज’ का संस्थापक सदस्य और पूर्व अध्यक्ष रहा है। इस संस्था में दुनिया के 119 चुनाव संस्थान सदस्य हैं। आयोग अंतरराष्ट्रीय लोकतंत्र एवं निर्वाचन सहायता संस्थान (अंतरराष्ट्रीय आईडीईए) का भी संस्थापक सदस्य है और फिलहाल इस संस्था की अध्यक्षता कर रहा है। यह जिम्मेदारी किसी भी देश की चुनावी संस्था की अंतरराष्ट्रीय स्वीकार्यता का महत्वपूर्ण संकेत है। भारत का अनुभव दूसरे देशों के लिए उपयोगी है। खबरों की मानें, तो चुनाव आयोग ने 2011 से अब तक 141 देशों के करीब 3,000 चुनाव अधिकारियों को प्रशिक्षण दिया है या वहां से प्रशिक्षण दिए जाने का अनुरोध उसे मिला है। इनमें ऑस्ट्रेलिया, ब्रिटेन, ब्राजील, फ्रांस, इंडोनेशिया, इजरायल, दक्षिण अफ्रीका सहित कई देश शामिल हैं। नेपाल, भूटान और नामीबिया में भारतीय तकनीक आधारित इलेक्ट्रॉनिक वोटिंग मशीनों के इस्तेमाल के लिए भी आयोग ने तकनीकी सहयोग दिया है। इन सबसे भारतीय चुनाव आयोग को दुनिया भर में सम्मान की नजरों से देखा जाता है। ऐसे में, उस पर अभी जिस तरह से उंगली उठाई जा रही है, वह दुखद है। विपक्ष को ऐसा कोई आंदोलन छेड़ने से पहले यह जरूर देखना चाहिए कि क्या वाकई चुनाव आयोग अपनी साख को नुकसान पहुंचाने का काम कर रहा है? एक सांविधानिक संस्था को लेकर विपक्ष की यह राजनीति समझ से परे है। मैं यह नहीं कह रहा कि आयोग से जुड़े सवालों और आलोचनाओं पर लोकतांत्रिक विमर्श नहीं होना चाहिए। बेशक, ऐसा हो, लेकिन आलोचना का अर्थ यह नहीं कि उसकी पूरी संस्थागत विश्वसनीयता को ही नकार दिया जाए। दुनिया के कई देशों के साथ भारतीय चुनाव आयोग लगातार सहयोग कर रहा है, दूसरे देशों को प्रशिक्षण दे रहा है और भारतीय चुनाव प्रक्रिया को नई ऊंचाई दे रहा है। यही कारण है कि उसकी विश्वसनीयता पर अभी जो दाग लगाने का प्रयास हो रहा है, उससे भारतीय लोकतंत्र की प्रतिष्ठा धूमिल होगी। इससे हमारे राजनीतिक दलों को बचना चाहिए।

पहाड़ों की राजनीति लेने लगी करवट! उत्तराखंड कांग्रेस में छिड़ी महाभारत और हरीश रावत के तेवर बड़े सियासी तूफान के संकेत दे रहे हैं

पहाड़ की राजनीति में वैसे तो मौसम कब करवट ले ले, कहा नहीं जा सकता, लेकिन इस बार कांग्रेस के भीतर का मौसम कुछ ज्यादा ही बिगड़ा हुआ नजर आ रहा है। एक तरफ भाजपा लगातार संगठन को चुनावी मोड़ में ले जा रही है, दूसरी तरफ कांग्रेस अपने ही घर की उठापटक से बाहर निकलने का रास्ता तलाश रही है। इस पूरी कहानी के केंद्र में एक बार फिर वही पुराने चेहरे हरीश रावत हैं। फर्क सिर्फ इतना है कि इस बार सवाल यह है कि लगातार चुनावी पराजयों के बाद भी कांग्रेस आखिर बार-बार उन्हीं पर दांव क्यों लगाये? और क्या अब भी उनके पास उत्तराखंड की राजनीति को निर्णायक रूप से प्रभावित करने की उतनी ही ताकत बची है? हम आपको बता दें कि कांग्रेस हाईकमान ने हरीश रावत की ‘धन्यवाद एवं जनसंवाद यात्रा’ को लेकर साफ संदेश दिया है कि चुनावी राज्य में किसी एक नेता का समानांतर अभियान नहीं चल सकता और पार्टी को सामूहिक रूप से चुनाव लड़ना होगा। लेकिन हरीश रावत पीछे हटने की बजाय अपनी यात्रा पर आगे बढ़े। उनका कहना है कि वे कांग्रेस को सत्ता में वापस लाने के लिए जनता के बीच जा रहे हैं। सुनने में यह बात बिष्कुल कांग्रेस के हित में लगती है, लेकिन राजनीति में सिर्फ इरादा नहीं, नतीजे भी देखे जाते हैं और यहीं से हरीश रावत की मौजूदा राजनीतिक हैसियत पर सवाल उठने शुरू होते हैं। हरीश रावत उत्तराखंड के बड़े नेताओं में रहे हैं, इसमें कोई दो राय नहीं। उन्होंने मुख्यमंत्री की कुर्सी संभाली, केंद्र की राजनीति में लंबी पारी खेली और उत्तराखंड कांग्रेस को कई मुश्किल दौर में संभाला। लेकिन राजनीति में किसी नेता का कद सिर्फ

उसके पुराने पदों से नहीं मापा जाता। चुनावी राजनीति में जनता का फैसला सबसे बड़ा पैमाना होता है और अगर इसी पैमाने पर हरीश रावत के पिछले कुछ चुनावों को देखा जाए तो तस्वीर बहुत चमकदार नहीं दिखाई देती। 2017 का विधानसभा चुनाव शायद इसका सबसे बड़ा उदाहरण है। मुख्यमंत्री रहते हुए हरीश रावत ने दो विधानसभा सीटों से चुनाव लड़ने का फैसला किया। हरिद्वार ग्रामीण और किच्छा, दोनों सीटों पर वह सवाल यह है कि लगातार चुनावी पराजयों के बाद भी कांग्रेस आखिर बार-बार उन्हीं पर दांव क्यों लगाये? और क्या अब भी उनके पास उत्तराखंड की राजनीति को निर्णायक रूप से प्रभावित करने की उतनी ही ताकत बची है? हम आपको बता दें कि कांग्रेस हाईकमान ने हरीश रावत की ‘धन्यवाद एवं जनसंवाद यात्रा’ को लेकर साफ संदेश दिया है कि चुनावी राज्य में किसी एक नेता का समानांतर अभियान नहीं चल सकता और पार्टी को सामूहिक रूप से चुनाव लड़ना होगा। लेकिन हरीश रावत पीछे हटने की बजाय अपनी यात्रा पर आगे बढ़े। उनका कहना है कि वे कांग्रेस को सत्ता में वापस लाने के लिए जनता के बीच जा रहे हैं। सुनने में यह बात बिष्कुल कांग्रेस के हित में लगती है, लेकिन राजनीति में सिर्फ इरादा नहीं, नतीजे भी देखे जाते हैं और यहीं से हरीश रावत की मौजूदा राजनीतिक हैसियत पर सवाल उठने शुरू होते हैं। हरीश रावत उत्तराखंड के बड़े नेताओं में रहे हैं, इसमें कोई दो राय नहीं। उन्होंने मुख्यमंत्री की कुर्सी संभाली, केंद्र की राजनीति में लंबी पारी खेली और उत्तराखंड कांग्रेस को कई मुश्किल दौर में संभाला। लेकिन राजनीति में किसी नेता का कद सिर्फ

2022 में विधानसभा की हार, लगातार चुनावी पराजय का यह सिलसिला किसी भी नेता के राजनीतिक भविष्य पर सवाल खड़ा करने के लिए काफी है। लेकिन कहानी यहीं खत्म नहीं होती। 2024 के लोकसभा चुनाव में हरिद्वार से कांग्रेस ने हरीश रावत के बेटे वीरेंद्र रावत को मैदान में उतारा। मुकाबला भाजपा के पूर्व मुख्यमंत्री त्रिवेद्र सिंह रावत से था। नतीजा फिर कांग्रेस के खिलाफ गया। त्रिवेद्र सिंह रावत ने वीरेंद्र रावत को करीब 1.64 लाख वोटों से हरा दिया। यानी जिस परिवार को कांग्रेस लंबे समय से उत्तराखंड की राजनीति में एक मजबूत आधार मानती रही है, उसके सामने भी चुनावी जमीन उतनी मजबूत दिखाई नहीं दी, जितनी पार्टी शायद मानती रही है। यहीं से सवाल पैदा होता है कि बार-बार हरीश रावत पर ही दांव क्यों लगाया जाये? क्या कांग्रेस के पास उत्तराखंड में कोई नया चेहरा नहीं है? क्या पार्टी ने नई पीढ़ी का नेतृत्व तैयार नहीं किया? क्या संगठन के भीतर ऐसा कोई नेता नहीं है जो हरीश रावत के बिना कांग्रेस को चुनावी मुकाबले में खड़ा कर सके? या फिर कांग्रेस हाईकमान को अब भी लगता है कि चुनाव जीतने की क्षमता भले कम हुई हो, लेकिन हरीश रावत के पास वह राजनीतिक अनुभव, जनसंपर्क और संगठनात्मक पकड़ है जिसे नजरअंदाज करना पार्टी के लिए नुकसानदेह होगा? देखा जाये तो हरीश रावत की सबसे बड़ी ताकत यही है कि वे उत्तराखंड की राजनीति को बेहद करीब से जानते हैं। वे पहाड़ की भाषा समझते हैं, मैदान की राजनीति को समझते हैं और कांग्रेस के पुराने कार्यकर्ताओं के बीच उनकी पकड़ भी है। वे राजनीतिक मुद्दों को जनता की भाषा में बदलने की

कला जानते हैं। लेकिन उनकी सबसे बड़ी कमजोरी भी अब सामने है। उनकी व्यक्तिगत चुनावी विश्वसनीयता पर लगातार सवाल उठ रहे हैं। जब कोई नेता खुद लगातार चुनाव हार रहा हो तो उसके असमंजस दिखाई देता है। पार्टी उन्हें पूरी तरह किनारे नहीं कर सकती, क्योंकि उनका अनुभव और जनाधार अब भी उपयोगी है। लेकिन पार्टी उन्हें पूरी तरह आगे भी नहीं कर सकती, क्योंकि तब बाकी नेताओं और गुटों के बीच असंतोष बढ़ने का खतरा है। अगर हरीश रावत अपनी अलग राजनीतिक गतिविधियां जारी रखते हैं तो हाईकमान को डर है कि चुनाव से पहले ही कांग्रेस का मंच अलग-अलग हिस्सों में बंट जाएगा। देखा जाये तो उत्तराखंड कांग्रेस की असली समस्या यही है। उसके पास नेता बहुत हैं, लेकिन नेतृत्व का सर्वमान्य चेहरा नहीं है। हर नेता अपने समर्थकों के साथ खड़ा है, हर गुट अपनी राजनीतिक जगह चाहता है और दिल्ली चाहती है कि चुनाव आते-आते सभी एक मंच पर दिखाई दें। लेकिन पहाड़ की राजनीति में जितनी ऊंचाई होती है, उतने ही मोड़ भी होते हैं। कांग्रेस के सामने इस समय सबसे बड़ा मोड़ नेतृत्व का ही है। उपर भाजपा की कहानी बिल्कुल अलग दिखाई दे रही है। 2017 में भाजपा ने 70 में से 57 सीटें जीतकर कांग्रेस को सत्ता से बाहर किया था। 2022 में भाजपा का आंकड़ा घटकर 47 जरूर हुआ, लेकिन सत्ता उसके हाथ से नहीं निकली। कांग्रेस 19 सीटों तक पहुंची, मुद्दों को जनता की भाषा में बदलने की

इसके बाद 2024 के लोकसभा चुनाव में भाजपा ने उत्तराखंड की पांचों सीटें जीतकर कांग्रेस का खता तक नहीं खुलने दिया। यानी विधानसभा चुनाव से पहले भाजपा के पास लगातार चुनावी जीत की मनोवैज्ञानिक बढ़त भी है और मजबूत संगठन की ताकत भी। भाजपा की सबसे बड़ी खुशी यह है कि वह पिछली जीत के भरोसे बैठी दिखाई नहीं देती। वह उन सीटों पर भी संगठन मजबूत करने में जुटी है जहां उसे विधानसभा चुनाव में हार मिली थी। पार्टी की तैयारी बूथ स्तर तक दिखाई देती है और उसके सामने चुनाव सिर्फ सरकार बचाने का नहीं, बल्कि उत्तराखंड में अपने राजनीतिक वर्चस्व को और मजबूत करने का है। इसके उलट कांग्रेस के पास सरकार के खिलाफ मुद्दों की कोई कमी नहीं है। बेरोजगारी है, भर्ती परीक्षाओं के सवाल हैं, पलायन है, पहाड़ के गांवों का खाली होना है, जमीन और जंगल के सवाल हैं, युवाओं की नाराजगी है और स्थानीय अस्मिता से जुड़े मुद्दे हैं। लेकिन इन मुद्दों को एक बड़े राजनीतिक अभियान में बदलने से पहले कांग्रेस को अपने भीतर की लड़ाई खत्म करनी होगी। यही वह जगह है जहां भाजपा को सबसे बड़ा फायदा मिल रहा है। हालांकि कांग्रेस के लिए उम्मीद पूरी तरह खत्म नहीं हुई है। 2024 में बद्रीनाथ और मंगलौर विधानसभा उपचुनाव जीतना यह दिखाता है कि भाजपा अजेय नहीं है। लेकिन केदारनाथ उपचुनाव में भाजपा की जीत ने यह भी साफ कर दिया कि कांग्रेस के सामने चुनौती छोटी नहीं है। उसे सिर्फ भाजपा के खिलाफ माहौल बनाने से काम नहीं चलेगा, उसे अपना संगठन, अपना नेतृत्व और अपना चुनावी संदेश तीनों मजबूत करने होंगे।

ईवीएम पर बार-बार सवाल उठाने वालों ने बैलेट पेपर के जरिये हुए चुनावों के एक दिन पहले आये परिणाम देखे क्या

भारतीय चुनावी राजनीति में इन दिनों ईवीएम बनाम बैलेट पेपर की बहस फिर तेज है। विपक्षी दलों का एक वर्ग लगातार मांग कर रहा है कि देश में इलेक्ट्रॉनिक वोटिंग मशीनों की जगह पुराने बैलेट पेपर से चुनाव कराए जाएं। हाल में INDIA ब्लॉक ने भी बैलेट पेपर की वापसी की मांग दोहराई है और चुनाव आयोग के खिलाफ राजनीतिक अभियान तेज किया है। लेकिन इस बहस के बीच एक असहज सवाल विपक्ष से भी पूछा जाना चाहिए कि अगर बैलेट पेपर ही चुनावी निष्पक्षता की गारंटी है, तो हाल में बैलेट पेपर से हुए चुनावों के नतीजों की व्याख्या विपक्ष किस तरह करेगा हम आपको बता दें कि असम के सिलचर में 3 अक्टूबर को नगर निगम के पहले चुनाव में बैलेट पेपर से मतदान हुआ। परिणाम में भाजपा ने 42 में से 32 सीटें जीतीं और उसकी सहयोगी असम गण परिषद ने दो सीटें हासिल कीं। कांग्रेस को केवल दो सीटें मिलीं, जबकि छह सीटों पर निर्दलीय उम्मीदवार विजयी रहे। यानी बैलेट पेपर वाले चुनाव में भी भाजपा-नीत NDA ने दो-तिहाई से अधिक सीटें जीत लीं। यह परिणाम इसलिए महत्वपूर्ण है क्योंकि ईवीएम पर सवाल उठाने वाली राजनीति में अवसर यह धारणा बनाई जाती है कि यदि चुनाव बैलेट पेपर से हो



तो परिणाम अलग होगा। सिलचर का परिणाम कम-से-कम इतना जरूर बताता है कि बैलेट पेपर अपने आप किसी पार्टी के पक्ष या विपक्ष में परिणाम नहीं बदल देता। मतदाता जिस राजनीतिक दल को समर्थन देना चाहता है, वह अपना समर्थन मतदान की किसी भी व्यवस्था में व्यक्त कर सकता है। इसी संदर्भ में इस साल हुए पांच विधानसभा चुनावों यानि असम, पश्चिम बंगाल, तमिलनाडु, केरल और पुडुचेरी के पोस्टल बैलेट आकड़ों की भी चर्चा होनी जरूरी है। निर्वाचन आयोग के चुनाव नतीजों वाले पोर्टल पर प्रत्येक

विधानसभा क्षेत्र में ईवीएम वोटों के साथ पोस्टल वोटों का भी अलग विवरण दर्ज है। आप इनका विश्लेषण करेंगे तो पाएंगे कि भाजपा और एनडीए को अच्छी खासी संख्या में पोस्टल बैलेट के जरिये भी मत मिला था। असम में तो कई निर्वाचन क्षेत्रों में भाजपा उम्मीदवारों को पोस्टल बैलेट में मजबूत समर्थन मिला था। पश्चिम बंगाल में भी कई ऐसे निर्वाचन क्षेत्र रहे जहां भाजपा उम्मीदवारों को सैकड़ों पोस्टल वोट मिले और वे परिणाम तय करने में महत्वपूर्ण साबित हुए। हम आपको बता दें कि पोस्टल बैलेट मुख्यतः चुनाव ड्यूटी पर

तैनात कर्मचारियों और कानून के तहत पात्र अन्य श्रेणियों के मतदाताओं से जुड़े होते हैं। इसलिए इनके आधार पर पूरे राज्य की जनता की राजनीतिक पसंद का निष्कर्ष निकालना उचित नहीं होगा। लेकिन ये आंकड़े एक महत्वपूर्ण राजनीतिक सवाल जरूर खड़ा करते हैं। सवाल उठता है कि यदि किसी दल का तर्क है कि मतदान की मशीन यानि ईवीएम ही उसकी हार का कारण है, तो उसे उन चुनावों और निर्वाचन क्षेत्रों को भी देखना चाहिए जहां कागज पर वोट पड़े और फिर भी परिणाम उसके पक्ष में नहीं आया।

पाकिस्तान के गले पड़ा मक्का समझौता

सऊदी अरब में हूती विद्रोहियों के हालिया हमलों की एक शृंखला ने मक्का संयुक्त रक्षा समझौता, यानी मक्का पैक्ट को सक्रिय कर दिया है। यह पश्चिम एशिया की सुरक्षा संरचना में एक अहम मोड़ है। मक्का पैक्ट उत्तर अटलांटिक संधि संगठन (नाटो) के अनुच्छेद 5 के ‘सामूहिक सुरक्षा दांचे’ के समान है, जिसमें किसी एक सदस्य पर हुआ हमला सैद्धांतिक रूप से सब पर काक्रमण माना जाता है। मक्का पैक्ट पश्चिम एशिया में अमेरिका के नेतृत्व वाले पारंपरिक सुरक्षा कवच के एक विकल्प के रूप में उभरा है। दरअसल, इसकी मुख्य वजह अमेरिका-इजरायल और ईरान के बीच बढ़ता क्षेत्रीय युद्ध है। हालांकि, इस समझौते को सक्रिय करने का कारण हूतियों द्वारा दक्षिण अरब में किए गए हालिया हमले हैं। अब यह समझौता एक सक्रिय सैन्य गठबंधन में तब्दील हो गया है। हालांकि, इस समझौते का विश्लेषण इसकी दांचागत कमजोरियों को उजागर करता है और इसके प्रभाव को लेकर संदेह भी पैदा करता है। मक्का पैक्ट की सबसे बड़ी कमजोरी इसके सदस्य देशों की खतरे संबंधी पृथक धारणाओं में निहित है। पाकिस्तान की रणनीति भारत-केंद्रित रही है। उसके सभी सैन्य सिद्धांत भारत को शत्रु मानकर विकसित हुए हैं, जबकि मक्का पैक्ट

उसे पश्चिम एशिया की सुरक्षा संरचना के प्रति प्रतिबद्ध करता है। हालांकि, इसमें पाकिस्तान की सेना और उसके फील्ड मार्शल आसिम मुनिर के निजी हित निहित हैं। चूंकि पाकिस्तान आंतरिक रूप से बेहद कमजोर है, अतः यह करार उसे आंतरिक सुरक्षा, आर्थिक व राजनीतिक संकटों से घरेलू ध्यान भटकाने का एक सुविधाजनक मंच प्रदान कर देता है। सऊदी अरब की सुरक्षा-व्यवस्था मुख्यतः ईरान और पश्चिम एशिया में हूती व हिज्बुल्लाह जैसे उसके छत्र लड़ाका समूहों से निपटने पर केंद्रित है। वाशिंगटन और तेहरान में यदि कोई कूटनीतिक समझौता होता है,तब भी रियाद अपने अस्तित्व के लिए तेहरान को स्थायी खतरे के रूप में देखता रहेगा। अतः मक्का पैक्ट को वह एक वैकल्पिक सुरक्षा कवच मानता है। हालिया हूती बमबारी ने रियाद की पौरी सामरिक सहायता की आवश्यकता को रेखांकित किया है। मक्का पैक्ट में स्थानीय छ्त्र संघर्षों को एक सांप्रदायिक जंग में तब्दील करने का भी जोखिम है, जिसमें सुन्नी (सऊदी अरब-तुर्किये-पाकिस्तान) का सामना ईरान और उसके समर्थित शक्तिशाली शिया धुरी-तंत्र (हिज्बुल्लाह, हूती आदि) से हो सकता है। पश्चिम एशिया में तुर्किये का मुख्य प्रतिद्वंद्वी इजरायल है। तुर्किये नाटो का भी सदस्य है,



जो इजरायल का सबसे करीबी सहयोगी है। यदि अंकारा और तेल अवीव के बीच संघर्ष हुआ, तो स्पष्ट नहीं है कि नाटो किसका पक्ष लेगा? अंकारा को सीरिया-तुर्किये सीमा विवादों का भी सामना करना पड़ता है। अतः उसे एक साथ दो सामूहिक सुरक्षा व्यवस्थाओं का हिस्सा होने की दुविधा और चुनौतियों से जूझना पड़ेगा। अलग-अलग रणनीतिक उद्देश्यों के अलावा यह समझौता गंभीर ऑपरेशनल चुनौतियों का भी सामना करेगा। पारंपरिक मारक क्षमता के जरिये ईरान के व्यापक छ्त्र नेटवर्क को पराजित करना ऐतिहासिक रूप से कठिन रहा है। उसने अपना

छ्त्र नेटवर्क विषम युद्ध के लिए ही गढ़ा है, अतः केवल मारक क्षमता से इसे पराजित नहीं किया जा सकता। साल 2015 में यमन सरकार और सऊदी अरब के गठजोड़ के बावजूद हूती विद्रोहियों ने अपना अस्तित्व बनाए रखा है। ऐसे में, यह अपेक्षा कि पाकिस्तानी सेनाएं और तुर्किये ड्रोन अब यमन में हूतियों को निष्प्रभावी कर देंगे, यह संदेहास्पद है, क्योंकि इस्लामाबाद अपने संप्रभु क्षेत्र में तो तहरीक-ए-तालिबान पाकिस्तान को खत्म नहीं कर पा रहा। यह गठबंधन भौगोलिक रूप में भी जटिल है। शीत युद्ध के दौर के सेंट्रल ट्रीटी ऑर्गेनाइजेशन (सैंटो) के भौगोलिक विस्तार

की नकल पर आधारित मक्का पैक्ट तीन अलग-अलग रणनीतिक क्षेत्रों में फैला हुआ है। तुर्किये एक यूरेशियाई शक्ति के रूप में कार्य करता है, सऊदी अरब खाड़ी का आधार देश है और पाकिस्तान दक्षिण एशिया का हिस्सा है। यह भौगोलिक जटिलता लॉजिस्टिक सेवाओं और वास्तविक समय में शक्ति-प्रक्षेपण क्षमता को गंभीर रूप से सीमित करती है। एक ऐसा गठबंधन, जो तीन क्षेत्रीय परिसरों में फैला हो, रणनीतिक एकजुटता हासिल करने के लिए संघर्ष करता रहेगा।

सन् 1979 में सैंटो का विघटन याद दिलाता है कि ऐसी व्यवस्थाओं का अंत किस प्रकार होता है। इस गठबंधन का पूर्व की ओर संभावित विस्तार, भू-राजनीतिक जटिलता की एक और परत उघेरता है। बांग्लादेशी विदेश मंत्री खलीलुर रहमान और विदेशी मामलों के सलाहकार हुमायूं कबीर ने संकेत दिया है कि यदि औपचारिक रूप से आमंत्रित किया जाता है, तो ढाका भी मक्का पैक्ट में शामिल होने को तैयार है।

मौजूदा त्रिदेशीय गठबंधन में बांग्लादेश का शामिल होना बंगाल की खाड़ी में एक अवांछित रणनीतिक आधार प्रदान करेगा। हालांकि, बंगाल की खाड़ी में पाकिस्तान की पहुंच को समान रूप से लाभ पहुंचाएगा। पाकिस्तान इस

खिंते में 1971 से पूर्व की स्थिति बनाना चाहता है, हालांकि ढाका के लिए इसका रणनीतिक औचित्य अत्यंत संदिग्ध है। उल्टे यह ढाका के सैन्य दायित्व को कई गुना बढ़ा देगा। बांग्लादेश को भारत से अस्तित्वगत खतरा नहीं है, जिसके लिए किसी दूरस्थ सैन्य गुट में शामिल होना आवश्यक हो। यदि क्षेत्रीय तनाव कभी सैन्य संघर्ष में बदलता है, तो बताने की जरूरत नहीं भारत की पारंपरिक सैन्य श्रेष्ठता बनी हुई है।

परिणामस्वरूप, मक्का पैक्ट में ढाका की रुचि पूरी तरह इस्लामिक वैचारिकी पर आधारित प्रतीत होती है और वास्तविक राष्ट्रीय सुरक्षा की खोज के बजाय घरेलू राजनीतिक फायदे की ज्यादा महक देती है। कुल मिलाकर, इस्लामी सामंजस्य की एक नई पहल के बजाय मक्का पैक्ट अभूतपूर्व भू-राजनीतिक संघर्ष पैदा करने की दिशा में अग्रसर है। हालांकि, यह पहल भारत को ईरान, यूएई और इजरायल के साथ नए द्विपक्षीय या बहुपक्षीय गठजोड़ बनाने के अवसर देता है। ऐसा प्रतीत हो रहा है कि पाकिस्तान मुस्लिम राषों के आपसी संघर्ष के जौहर में फंसाता जा रहा है। यह वैचारिक और आर्थिक रूप से उसे महंगा पड़ सकता है। भारत को इससे पश्चिम एशिया में अपनी पकड़ मजबूत करने के और अधिक अवसर मिलेंगे।



एक नज़र

लापता डॉक्टर का कांड! लोहिया संस्थान में नौकरी के नाम पर करोड़ों की ठगी

लखनऊ। लखनऊ, वरिष्ठ संवाददाता। लखनऊ के मड़ियांव इलाके से पांच अक्तूबर को रहस्यमय हालात में लापता हुए बीएएमएस डॉ. सत्यरत्न सिंह ने 15–20 लोगों से करोड़ों रुपये की ठगी की। पुलिस की तपतीश में पता चला है कि डॉक्टर ने कई बेरोजगार युवाओं की नौकरी लोहिया संस्थान व कई अन्य विभागों में लगवाने के नाम पर उसने ठगी की थी। पुलिस की टीमें डॉक्टर की तलाश में दबिश दे रही हैं। तपतीश में लगी पुलिस टीम को डॉक्टर की आखिरी लोकेशन पुरनिया चौराहे पर मिली है। इसके बाद सोमवार देर रात मोबाइल रिवच आफ हो गया। फिर नहीं खुला। पुलिस ने डॉक्टर सत्यरत्न की पत्नी डॉ. शिपा की मदद से चौराहे के पास से ही उसकी कार भी बरामद कर ली है। इसी कार से डॉक्टर घर से निकला था। उसके बाद नहीं लौटा। डॉ. मड़ियांव इलाके के रहने वाले हैं। पांच अक्तूबर को वह कार से घर से निकले थे। इसके बाद नहीं लौटे। पत्नी शिपा ने फोन किया तो मोबाइल रिवच आफ मिला। शिपा के मुताबिक पति के परिचित प्रखर पांडेय उनके घर पहुंचे। उन्होंने बताया कि सत्यरत्न ने उन्हें फोन कर बताया कि हजरतगंज में दो स्कॉर्पियो सवार उनका पीछा कर रहे हैं। प्रखर हजरतगंज पहुंचे तो उन्हें कोई नहीं मिला मोबाइल रिवच आफ मिला। शिपा ने प्रखर व कुछ अज्ञात के खिलाफ तहरीर देकर अपहरण का मुकदमा दर्ज कराया है थी। इंसपेक्टर मड़ियांव ने बताया कि डॉक्टर की तलाश में पुलिस टीम दबिश दे रही हैं। एसीपी अलीगंज शशि प्रकाश मिश्र ने बताया कि डॉक्टर ने प्रखर के परिवार के एक सदस्य की नौकरी लगवाने के नाम पर उससे भी 7.5 लाख रुपये ले लिए थे। इसके अलावा कई अन्य लोगों से भी डॉक्टर ने रुपये लिए थे। नौकरी न लग पाने के कारण वह लोग रुपये मांग रहे थे। इस लिए डॉक्टर अपरहण की झूठी कहानी रक्कर लापता हो गया। पुलिस की टीमें डॉक्टर की तलाश में दबिश दे रही हैं। वहीं माल थाना क्षेत्र में फजी व्यक्ति को असली बताकर कूटरचित दस्तावेजों के आधार पर जमीन का बैनामा कराने के दोषियों पर पुलिस ने बताया कि बीरपुर निवासी अर्जुन विमल की तहरीर पर आनंद दीक्षित, दीपेंद्र सिंह व महेंद्र, ललित, हजारी प्रसाद के खिलाफ धोखाधड़ी, जालसाजी, कूटरचरना समेत अन्य धाराओं में मुकदमा दर्ज कर जांच शुरू की गई है अर्जुन ने बताया कि रहीमाबाद इलाके के चैना गांव निवासी आनंद दीक्षित, दीपेंद्र सिंह, ललित ने सालहं नगर स्थित गाटा संख्या 329क की जमीन खरीदवाने की बात कही थी। सौदा 36 लाख रुपये में तय हुआ था।

इलाहाबाद हाईकोर्ट का ऐतिहासिक कदम, एक लाख फैसलों का पूरा किया हिंदी अनुवाद, वेबसाइट पर भी अपलोड
प्रयागराज। न्याय को जन–जन की भाषा में सुलभ कराने की दिशा में इलाहाबाद हाईकोर्ट ने एक ऐतिहासिक कदम हासिल किया है। इलाहाबाद हाईकोर्ट के एक लाख फैसलों का हिंदी में अनुवाद पूरा हो चुका है और ये सभी निर्णय हाईकोर्ट की आधिकारिक वेबसाइट पर आम जनता व विधिक समुदाय के लिए नि-शुल्क उपलब्ध कर दिए गए हैं। इस ऐतिहासिक उपलब्धि के अवसर पर उच्च न्यायालय के मुख्य न्यायमूर्ति अरुण भंसाली ने आधिकारिक वेबसाइट पर एक लाखवां हिंदी अनुवादित निर्णय स्वयं अपलोड किया। साथ ही शून्य से एक लाख अनुवादित फैसलों तक की यात्रा को संजोने वाले विशेष स्मारिका–संकलन द वर्नाकुलर वॉयस ऑफ जस्टिस का विमोचन भी किया। इस अवसर को यादगार बनाने के लिए उपस्थित न्यायाधीशों ने भी अपने एक–एक निर्णय का हिंदी अनुवाद वेबसाइट पर अपलोड किया। इस ऐतिहासिक क्षण पर प्रशासनिक समिति के सदस्य न्यायमूर्ति अरिंदम सिन्हा, न्यायमूर्ति अतुल श्रीधरन वी, न्यायमूर्ति सिद्धार्थ वर्मा के अलावा एआई असिस्टेड लीगल ट्रांसलेशन एडवाइजरी, ई–एचसीआर एवं आईएलआर कमेटी के अध्यक्ष न्यायमूर्ति अजित कुमार, सदस्य न्यायमूर्ति समीर जैन व न्यायमूर्ति विक्रम डी चौहान भी उपस्थित रहे। अंत में न्यायमूर्ति विक्रम डी चौहान ने धन्यवाद ज्ञापित किया। न्यायिक निर्णयों को स्थानीय भाषा में उपलब्ध कराने की परिकल्पना उच्चतम न्यायालय के पूर्व मुख्य न्यायमूर्ति जॉ डीवाई चंद्रचूड ने की थी। उनके निर्देश के क्रम में इलाहाबाद हाईकोर्ट में 16 अगस्त 2023 को सुपीम कोर्ट विधिक अनुवाद सॉफ्टवेयर (सुवास) प्रकोष्ठ की स्थापना की गई थी। 23 अगस्त 2023 को पहला अनुवादित निर्णय वेबसाइट पर अपलोड किया गया। 12 दिसंबर 2025 को 50,000वां और अब 1,00,000वां निर्णय मुख्य न्यायाधीश द्वारा अपलोड कर यह कीर्तिमान स्थापित किया गया।

लखनऊ। यूपी के औद्योगिक क्षेत्रों में मकान और प्लाट का नक्शा पास कराना आसान हो गया है। उत्तर प्रदेश में औद्योगिक विकास प्राधिकरणों के तहत भवन निर्माण और भूखंडों के मानचित्र अनुमोदन की प्रक्रिया को सरल, पारदर्शी एवं व्यवस्थित बनाने की दिशा में महत्वपूर्ण कदम उठाया गया है। शुक्रवार को लोकभवन में आयोजित कैबिनेट की बैठक में उत्तर प्रदेश के औद्योगिक विकास प्राधिकरणों में मॉडल भवन विनियम–2026 लागू किए जाने के प्रस्ताव को मंजूरी प्रदान की गई। उत्तर प्रदेश सरकार के औद्योगिक विकास मंत्री नन्द गोपाल गुप्ता नन्दी ने कहा कि इस निर्णय से प्रदेश में नियोजित शहरी विकास, निर्माण गतिविधियों, रियल एस्टेट क्षेत्र और निजी निवेश को प्रोत्साहन मिलने की

उम्मीद है। मंत्री नन्दी ने बताया कि इसके माध्यम से भवन एवं भूखंड मानचित्रों की स्वीकृति से जुड़ी प्रक्रियाओं को अधिक सरल और सुगम बनाकर उद्योगों, निवेशकों, रियल एस्टेट क्षेत्र से जुड़े उद्यमियों तथा आम नागरिकों को सहूलियत प्रदान करने का प्रयास किया गया है। मॉडल भवन विनियम–2026 तैयार करने के लिए उत्तर प्रदेश के साथ गुजरात, दिल्ली, महाराष्ट्र, ओडिशा और तमिलनाडु के भवन विनियमों का अध्ययन किया गया। विभिन्न राज्यों में लागू प्रावधानों के तुलनात्मक अध्ययन के आधार पर प्रदेश की औद्योगिक विकास प्राधिकरणों की आवश्यकताओं के अनुरूप मॉडल तैयार किया गया है। इसका उद्देश्य भवन निर्माण से संबंधित नियमों में बेहतर समन्वय स्थापित करना और

अनुमोदन की प्रक्रिया को अधिक प्रभावी बनाना है। मॉडल भवन विनियमों के क्रियान्वयन से विनिर्माण, पर्यटन, सूचना प्रौद्योगिकी (आईटी), आईटीईएस, लॉजिस्टिक्स, स्वास्थ्य, शिक्षा और रियल एस्टेट जैसे क्षेत्रों में निजी निवेश को प्रोत्साहित करने में मदद मिलने की उम्मीद है। इन क्षेत्रों में निवेश बढ़ने से औद्योगिक गतिविधियों के विस्तार, रोजगार के नए अवसरों के सुजन और शहरी अर्थव्यवस्था को मजबूती मिलने की संभावनाएं हैं।

मॉडल भवन विनियम–2026 का उद्देश्य केवल भवन मानचित्रों की स्वीकृति को सरल बनाना ही नहीं, बल्कि भूमि के बेहतर उपयोग, निजी निवेश को बढ़ावा देने, गुणवत्तापूर्ण आवासीय सुविधाओं के विस्तार और प्रदेश के

नियोजित औद्योगिक एवं शहरी विकास को गति देना भी है। औद्योगिक विकास मंत्री नन्द गोपाल गुप्ता नन्दी ने कहा कि प्रदेश में औद्योगिक एवं शहरी अवस्थापना परियोजनाओं के विस्तार के साथ विकसित भूमि की मांग भी बढ़ रही है। ऐसे में भूमि का अधिकतम और नियोजित उपयोग सुनिश्चित करना महत्वपूर्ण है। मॉडल भवन विनियम इस दिशा में सहायक साबित हो सकते हैं। मंत्री नन्दी ने बताया कि नई व्यवस्था का एक प्रमुख उद्देश्य भवन एवं भूखंड मानचित्रों की मंजूरी से जुड़ी प्रक्रिया को नागरिकों और निवेशकों के लिए अधिक सुविधाजनक बनाना है। प्रक्रिया के सरल और पारदर्शी होने से निर्माण संबंधी अनुमोदन में स्पष्टता आएगी तथा उद्यमियों को परियोजनाओं की योजना बनाने में सहूलियत मिलेगी।

राष्ट्रपति से मिलने जा रहे विपक्षी सांसद, राहुल गांधी बोले- सरकार को बर्खास्त करना जरूरी

लखनऊ। मुख्य चुनाव आयुक्त ज्ञानेश कुमार के खिलाफ कांग्रेस के नेतृत्व में विपक्षी दल मोर्चा खोले हुए हैं। पिछले तीन दिनों से सड़को पर आ रहे विपक्षी नेता आज राष्ट्रपति द्रोपदी मुर्मू से मिलने के लिए जा रहे हैं। जानकारी के मुताबिक, इंडिया ब्लॉक में शामिल करीब 10 पार्टियों के नेता कांग्रेस पार्टी के नेतृत्व में राष्ट्रपति से मिलने के लिए जाएंगे। रिपोर्ट्स के मुताबिक, विपक्षी सांसद इस बैठक के दौरान राष्ट्रपति के सामने सीईसी ज्ञानेश कुमार को हटाने की मांग रखेंगे। इसके अलावा एसआईआर का मुद्दा भी सामने होगा। वर्तमान में राहुल गांधी, प्रियंका गांधी, ममता बनर्जी, मल्लिकार्जुन खरगे समेत कई बड़े विपक्षी नेता सेंट्रल हॉल में मीटिंग कर रहे हैं। इंडिया ब्लॉक के नेतृत्व में मार्च कर रहे विपक्षी नेताओं को विजय चौक पर रोक दिया गया है। इससे आगे केवल 10 सांसदों को जाने की इजाजत है। जिन नेताओं का राष्ट्रपति द्रोपदी मुर्मू के साथ अच्वाइंटमेंट तय है। वह आगे की तरफ जा रहे हैं। रिपोर्ट्स के मुताबिक इसमें राहुल गांधी, मल्लिकार्जुन खरगे, ममता बनर्जी, उमर अब्दुल्ला समेत कई अन्य नेता भी शामिल हैं। संसद के सेंट्रल हॉल में चल रही विपक्षी सांसदों की बैठक खत्म हो चुकी है। विपक्षी सांसद उनसे मिलने के लिए राष्ट्रपति भवन की तरफ आगे बढ़ रहे हैं। राहुल गांधी

सभी का नेतृत्व करते हुए नजर आ रहे हैं। वहीं, सभी नेता वोट चोर गद्दी छोड़ के नारे लगा रहे हैं। राहुल गांधी ने इंडिया गठबंधन की बैठक में कहा कि केवल ज्ञानेश कुमार को बर्खास्त करने से काम नहीं करने से काम नहीं चलेगा। उन्होंने कहा कि इस सरकार को बर्खास्त करना होगा। विपक्षी नेताओं के साथ बैठक कर रहे कांग्रेस नेता राहुल गांधी ने सीईसी ज्ञानेश कुमार के खिलाफ मोर्चा खोला। उन्होंने कहा कि ज्ञानेश कुमार को हमसे मिलना होगा। चुनावी नतीजों पर अभी भी किसी को भरोसा नहीं है। महाराष्ट्र और हरियाणा के चुनावी नतीजों पर सवाल बना हुआ है। विपक्षी सांसदों की बैठक में थोड़ा देर से पहुंचे उमर अब्दुल्ला मुख्य चुनाव आयुक्त के खिलाफ चल रहे विपक्षी सांसदों की बैठक में जम्मू-कश्मीर सीएम उमर अब्दुल्ला भी पहुंचे। हालांकि, वह थोड़ा देर से वहां पहुंचे। विपक्षी सांसदों के साथ बैठक के दौरान लोकसभा नेता विपक्ष राहुल गांधी ने पूर्व पीएम जवाहर लाल नेहरू के भाषण को याद किया। उन्होंने कहा, जवाहरलाल नेहरू ने एक बहुत मशहूर भाषण दिया था। यह भाषण 14 अगस्त 1947 को संसद के सेंट्रल हॉल में दिया गया था। मैं इंडिया से कुछ हिस्सा बताना चाहता हूं। यह भारत, पूरे एशिया और दुनिया के लिए एक अहम पल है। एक नया सितारा उदय हो रहा है।

योगी कैबिनेट ने पुराने बकायेदारों को दी बड़ी राहत, ब्याज माफी योजना के प्रस्ताव को मंजूरी



संबंधित कर कानूनों के अंतर्गत बकाया रखने वाले करदाताओं को राहत मिलने का रास्ता खुलेगा। उत्तर प्रदेश ब्याज माफी योजना–2026 के जरिए पुराने कर विवादों और बकायों के निस्तारण को प्रोत्साहित करने का अवसर मिलेगा। नोएडा इंटरनेशनल

एयरपोर्ट, जेवर अब ‘नरेन्द्र मोदी इंटरनेशनल एयरपोर्ट’ के नाम से जाना जाएगा। मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ की अध्यक्षता में शुक्रवार को हुई उत्तर प्रदेश कैबिनेट की बैठक में एयरपोर्ट के नामकरण का प्रस्ताव पारित किया गया है। प्रधानमंत्री नरेन्द्र

यूपी में नीरस रहा राज्यसभा चुनाव, निर्विरोध जीत गए सारे, भाजपा को 8 और सपा को 2 सीट मिली

लखनऊ। राज्यसभा चुनाव को लेकर रिजल्ट आ गया है। यूपी के सभी 10 उम्मीदवार निर्विरोध चुन लिए गए हैं। इनमें आठ भाजपा और दो सपा के प्रत्याशी शामिल हैं। इस बार राज्यसभा चुनाव पूरी तरह से नीरस रहा है। इसकी वजह रही चुनाव में किसी भी प्रतिद्वंदी का न होना। शुक्रवार को नामांकन पत्रों की स्वरूटनी और नाम वापसी के बाद निर्वाचन अधिकारी अजीत वर्मा ने सभी उम्मीदवारों के निर्विरोध चुनाव जीतने की घोषणा की तो भाजपा में खुशी की लहर दौड़ गई। वहीं सपाइयों में भी खुशी का ठिकाना नहीं रहा। दरअसल यूपी से केवल 10 सीटें ही राज्यसभा के लिए खाली थी। इसके लिए दो सपा और आठ भाजपा ने उम्मीदवारों को उतारा था। दो निर्दलीयों ने भी नामांकन दाखिल किया था, लेकिन उनका पर्चा रद्द कर दिया गया था। चुनाव मैदान में केवल 10 उम्मीदवार होने के चलते मतदान की नौबत ही नहीं आई और सभी उम्मीदवारों की निर्विरोध जीत की घोषणा कर दी गई। निर्विरोध निर्वाचित भाजपा उम्मीदवारों में धर्मपाल सिंह, विद्यासागर सोनकर, राधाकांत ओझा, प्रकाश पाल, प्रियंका सिंह रावत, गोपीकृष्ण पांडेय, राम प्रताप सिंह चौहान और श्रुति गंगवार शामिल हैं। वहीं, सपा के प्रोफेसर राम गोपाल यादव और धनराज परिमल नाथवानी भी निर्विरोध चुने गए। वर्मा ने बताया कि धनराज परिमल नाथवानी को छोड़कर बाकी सभी निर्वाचित उम्मीदवारों ने अपने निर्वाचन प्रमाणपत्र प्राप्त कर लिए हैं। यूपी से राज्यसभा चुनाव के लिए दो निर्दलीय प्रत्याशियों कोते सयत्ता व ओंकार नाथ चौरसिया ने नामांकन किया था, जिसे रद्द कर दिया गया था। जिसके बाद भाजपा के आठ और सपा के दो प्रत्याशियों का निर्विरोध जीतना तय हो गया था। राज्यसभा चुनाव के लिए नामांकन करने वाले प्रत्याशियों के पर्चों की जांच बुधवार हुई थी। मैदान में भाजपा के आठ, सपा के दो और दो निर्दलीय प्रत्याशियों ने ताल ठोंकी थी। जिसमें निर्दलीय प्रत्याशी के रूप में हैदराबाद के रहने वाले कंते सयत्ता और दूसरे ओंकार नाथ चौरसिया शामिल थे।

यूपी में अधिशासी अधिकारी के अपहरण की कोशिश, मचा हड़कंप; दो हिरासत में

लखनऊ। देवरिया, उत्तर प्रदेश के देवरिया की पथरदेवा नगर पंचायत के अधिशासी अधिकारी (ईओ) का गुप्तवार देर रात कुछ लोगों ने अपहरण करने की कोशिश की। इस सूचना से हड़कंप मच गया। चेयरमैन की तहरीर पर पुलिस दो लोगों को हिरासत में लेकर पूछताछ–जांच कर रही है। घटना के पीछे नगर पंचायत में टेंडर का विवाद बताया जा रहा है। पुलिस को दी गई तहरीर में नगर पंचायत पथरदेवा के चेयरमेन कमलेश सिंह उर्फ क्रांति सिंह ने लिखा है कि हिमांशु सिंह पथरदेवा नगर पंचायत में बतौर अधिशासी अधिकारी (ईओ) के पद पर तैनात हैं। गुरुवार को वह किसी काम से देवरिया गए थे। वहां कुछ अपरिचित चेहरे ईओ की गतिविधियों पर नजर रख रहे थे। इसकी जानकारी होने पर ईओ डर गए। रात 11 बजे वह उनके घर पहुंचे और घटनाक्रम की जानकारी दी। उस समय भी ईओ के मोबाइल पर एक व्यक्ति का बार–बार फोन आ रहा था।

उसने अधिशासी अधिकारी को कस्बे के एक चौराहे पर बुलाया। तहरीर के मुताबिक ईओ को लेकर चेयरमेन उस चौराहे पर पहुंचे तो हथियार से लैस आधा दर्जन लोग वहां खड़े थे। ईओ को देखते ही उन लोगों ने उन्हें मारते–पीटते हुए गाड़ी में जबरन बैठाने की कोशिश की। आरोपी सड़क पर खुलेआम असलहा लहरा रहे थे। इससे आस–पास दहशत का माहौल पैदा हो गया। चेयरमेन की सूचना पर तरकुलवा पुलिस मौके पर पहुंची दो लोगों को पकड़कर थाने ले गई। पुलिस उनसे पूछताछ कर रही है। घटना के पीछे नगर पंचायत के टेंडर का विवाद बताया जा रहा है। चर्चा है कि ईओ के साथ अभद्रता करने वाले खुद को एक जनप्रतिनिधि का खास बता रहे थे। देवरिया सदर क्षेत्राधिकारी संजय कुमार रेड्डी ने बताया कि नगर पंचायत पथरदेवा में ईओ के साथ मारपीट और अपहरण के प्रयास की तहरीर मिली है। घटना की जांच–पड़ताल की जा रही है।

यूपी के इस जिले में यहां नई रेल लाइन बनाने जा रही, कनेक्टिविटी बेहतर होगी

लखनऊ। यूपी के गोंडा जिले में झिलाही और टिकरी नई लाइन(15.72 किमी) बनाने की कवायद तेज हो गई है। मनकापुर में वाई–कनेक्शन के साथ मनकापुर–टिकरी के बीच दोहरीकरण (28.37 किमी) परियोजना के अंतर्गत इसे वर्ष 2025 में ?280.17 करोड़ की लागत से मंजूरी दी गई है। इसके तहत मनकापुर से टिकरी तक लाइन का दोहरीकरण भी किया जाएगा। पूर्वोत्तर रेलवे सीपीआरओ के मुताबिक मनकापुर से टिकरी रेलवे स्टेशन के बीच ट्रैक दोहरीकरण और झिलाही से टिकरी के बीच वाई आकार में नई रेलवे लाइन बिल्हने के लिए भूमि अधिग्रहण के लिए गजट जारी किया गया है। 3.19 हेक्टेयर भूमि अधिग्रहण के लिए धारा 20एफ की अधिसूचना जारी की जा रही है। भूमि



अधिग्रहण होने के बाद काम शुरू किया जाएगा। टिकरी–झिलाही खंड रेलवे की वन स्वीकृति (फॉरेस्ट क्लयीरेंस) का प्रस्ताव परिवेश पोर्टल पर प्रस्तुत किया जा रहा है। रेलवे अधिकारी टिकरी जंगल में डेरा पड़ने वाले जंगल के विभिन्न प्रजाति के पेड़ों की छ्पाव व लाट बनवाने में जुटे हुए हैं। टिकरी जंगल में वन भूमि व पेड़ों का मूल्यांकन करारकर रेलवे

उतनी धनराशि वन विभाग को देकर जल्ल से जल्द दो रेल लाइनें बनाने का कार्य शुरू करेगा। रेंजर अभिषेक प्रताप सिंह ने बताया कि रेलवे के अधिकारी व वन विभाग पेड़ों की छ्पाव करारके लाट बनवा रहा है। इसके बाद प्रजातिवार पेड़ों का मूल्यांकन कराया जाएगा। रेलवे की ओर से पूरी धनराशि विभाग को मुहैया कराने के बाद एनओसी जारी होगी। मनकापुर से टिकरी के बीच ट्रैक दोहरीकरण होने से अयोध्या धाम जाने के लिए ट्रेनों की संख्या बढ़ेगी। साथ ही साथ क्रासिंग से भी मुक्ति मिल जायेगी। जिससे ट्रेनें कम समय में अधिक दूरी तय कर सकेंगी। इसीलिए झिलाही से टिकरी के बीच वाई आकार की रेलवे लाइन बनेगी। इससे गोंडा से मनकापुर आने जाने वाली सभी ट्रेनों व पेड़ों का मूल्यांकन करारकर रेलवे

प्रक्रिया से छुटकारा मिल जायेगा। इंजन रिवर्सल न होने की वजह से करीब 45 मिनट का समय भी बचेगा। गोंडा से जो ट्रेन मनकापुर से होकर अयोध्या जाती थी वह झिलाही ही टिकरी होकर अयोध्या धाम के लिए प्रयागराज व वाराणसी से गोंडा तक भी ट्रेन का संचालन शुरू होगा। सीपीआरओ सुमित कुमार ने बताया कि झिलाही–टिकरी नई लाइन मनकापुर में वाई–कनेक्शन के साथ मनकापुर–टिकरी के बीच दोहरीकरण परियोजना के अंतर्गत स्वीकृत है। इसके लिए वर्ष 2025 में ?280.17 करोड़ की लागत मंजूर की गई थी। गोंडा जिले में अधिग्रहित की जाने वाली 3.19 हेक्टेयर भूमि के लिए धारा 20एफ की अधिसूचना जारी की जा रही है।

एसएसपी ऑफिस में आपा खो बैठी ननद, भाभी के पिता की पकड़ ली दाढ़ी, बुजुर्ग को छुड़ाने में पुलिस के छूटे पसीने

लखनऊ। यूपी के बुलंदशहर में एसएसपी कार्यालय परिसर में उस समय हंगामा हो गया, जब पति–पत्नी के विवाद में समझौते के लिए आए दोनों पक्षों के परिजन आपस में भिड़ गए। विवाद के दौरान पति की बहन ने अपनी भाभी के बुजुर्ग पिता से मारपीट करते हुए उनकी दाढ़ी पकड़ ली। मौके पर मौजूद पुलिसकर्मियों को महिला के चंगुल से बुजुर्ग को छुड़ाने में पसीने छूट गए। बुजुर्ग के साथ अभद्रता को देखकर मौके पर मौजूद लोगों ने महिला को जमकर खरी–खोटी सुनाई। नगर कोतवाल सुजीत उपाध्याय ने बताया कि आरोपी के खिलाफ मुकदमा दर्ज कर लिया है। वहीं, इस घटना का वीडियो वायरल हो रहा है,बुलंदशहर कोतवाली देहात क्षेत्र के एक गांव निवासी महिला का निकाह नरसेन क्षेत्र के एक गांव से युवक से हुआ है। वर्तमान में पति–पत्नी के बीच विवाद चल रहा है। मामला महिला सेल में समझौता बातों के लिए पहुंचा। शुक्रवार को दोनों पक्ष यहां पहुंचे थे। पति–पत्नी अंदर बातचीत कर रहे थे, जबकि बाहर पति की बहन और पत्नी के पिता बैठे हुए थे। प्रत्यक्षदर्शियों के मुताबिक, बाहर खड़े दोनों पक्षों में किसी बात को लेकर कहासुनी हो गई। बात इतनी बढ़ गई कि पति की बहन आपा खो बैठी और बुजुर्ग से मारपीट करते हुए सीधे उनके मुंह पर झपटते हुए उनकी दाढ़ी मजबूती से पकड़ ली। आननकह हुए इस हमले से परिसर में अफरातफरी मच गई। हंगामा देख आसपास मौजूद पुलिसकर्मिें तुरंत मौके पर पहुंचे। महिला बुजुर्ग की दाढ़ी छोड़ने को तैयार नहीं थी, जिसके चलते पुलिसकर्मियों को बीन–बचाव करने और बुजुर्ग को उसकी पकड़ से छुड़ाने में पसीने छूट गए। किसी तरह महिला पुलिसकर्मियों ने महिला पर काबू पाया।



गिरधर के कहने पर राधा को छोड़ना होगा अपना घर



हिंदी जनरल एंटरटेनमेंट चैनल अनमोल टीवी के पहले ओरिजिनल शो ‘हमारी राधा’ में राधा (सिमरन कौर) और गिरधर (अक्षय म्हात्रे) के रिश्ते में एक बेहद भावुक मोड़ आने वाला है। दोनों की शादी में आई दूरियाँ अब उस मोड़ पर पहुँच चुकी हैं, जहाँ उनका रिश्ता टूटने की कगार पर है। शनाया (वैदेही नायर) लगातार गिरधर पर राधा को अपनी जिंदगी से दूर करने का दबाव बना रही है। आखिरकार गिरधर भारी मन से राधा से घर छोड़ने के लिए कह देता है। वह राधा से कहता है कि अब वह उससे प्यार नहीं करता और सिर्फ अपने बेटे कियान की वजह से अब तक उसके साथ रहा था। गिरधर की ये बातें सुनकर राधा बुरी तरह टूट जाती है। फिर भी वह उससे दूर न जाने की गुहार लगाती है और उस परिवार और शादी को बचाए रखने की कोशिश करती है, जिसके लिए उसने अब तक बहुत कुछ सहा है। लेकिन, गिरधर अपने फैसले पर कायम रहता है और राधा से कियान के साथ घर छोड़ने के लिए कहता है। साथ बिताए पलों और पुरानी यादों के बीच राधा खुद को संभाल नहीं पाती। उसे यकीन ही नहीं होता कि जिस घर को उसने कभी अपना माना था, अब वहाँ उसके लिए कोई जगह नहीं है। इस मुश्किल पल में भी राधा के मन में कहीं न कहीं यह उम्मीद बनी रहती है कि गिरधर उसे रोक लेगा और अपने परिवार की अहमियत समझेगा। आखिरकार राधा गिरधर के साथ मिलकर बनाए उस घर से चली जाती है। तो क्या यह उनके रिश्ते का अंत है? क्या गिरधर का यह फैसला शनाया को वह सब पाने के और करीब ले जाएगा, जो वह चाहती है? या राधा के चले जाने के बाद गिरधर को उस परिवार की अहमियत समझ आएगी, जिसे वह खुद से दूर कर रहा है? गिरधर से दूर होकर राधा की जिंदगी में शुरू होने वाला यह नया अध्याय क्या उनके रिश्ते को तलाक की ओर ले जाएगा या इस दूरी के बाद भी उनके रिश्ते को बचाने की कोई उम्मीद बाकी रहेगी?

‘तेरा नखरा है झक्कास’ ने बढ़ाई ‘एहसास-द रियलाइजेशन’की धूम



इंडिपेंडेंट फिल्म ‘एहसास-द रियलाइजेशन’ ने अंबदन्या OTT पर रिलीज के बाद अपनी इमोशनल कहानी से दर्शकों का ध्यान खींचा था, लेकिन अब फिल्म का माहौल थोड़ा और रंगीन हो गया है। फिल्म का नया गाना ‘तेरा नखरा है झक्कास’ रिलीज होते ही इंटरनेट पर चर्चा बटोर रहा है। जहां फिल्म रिश्तों और प्यार की भावनात्मक कहानी के जरिए दर्शकों से जुड़ रही थी, वहीं इस चटपटे और एनर्जेटिक ट्रैक ने इसमें मस्ती का ऐसा तड़का लगाया है कि फिल्म को लेकर ऑनलाइन बज और तेज हो गया है। राकेश कुमार रवि और माही वाघ पर फिल्माया गया यह गाना अपने नाम की तरह ही पूरी तरह झक्कास अंदाज में पेश किया गया है। रंगीन विजुअल्स, डांस और दोनों लीड कलाकारों की मजेदार केमिस्ट्री गाने को एक अलग ही यूथफुल एनर्जी देती है। खास बात यह है कि बड़े बजट और भारी-भरकम प्रमोशन से दूर बनी इस फिल्म को गाने के जरिए सोशल मीडिया पर ऑर्गेनिक चर्चा मिल रही है। यानी फिल्म की मार्केटिंग मशीन भले छोटी हो, लेकिन दर्शकों की बातचीत अब धीरे-धीरे बड़ी होती जा रही है। ‘तेरा नखरा है झक्कास’ सिर्फ मस्ती के मामले में ही खास नहीं है। मेकर्स के मुताबिक, गाने की श्रुति भी फिल्म के बाकी हिस्सों की तरह RED कैमरे से की गई है। यह बात इसलिए दिलचस्प है क्योंकि सीमित बजट में बनी फिल्म ने अपने विजुअल्स के साथ समझौता नहीं किया। दाऊद शेख के निर्देशन में बनी इस फिल्म की कहानी और कॉन्सेप्ट सारांश सिंह बो. का है, जबकि स्क्रीनप्ले शालाका लोहोटी ने लिखा है। साराई अनिरुद्ध एंटरटेनमेंट के बैनर तले बनी फिल्म में मोहित दास, सारा और मनोज भी अहम भूमिकाओं में नजर आते हैं। फिल्म की सबसे बड़ी ताकत इसकी सादगी और रिश्तों से जुड़ी कहानी है, लेकिन नए गाने ने इसके प्रमोशन को एक बिल्कुल अलग रंग दे दिया है। एक तरफ दर्शक रवि और श्रेया की कहानी में इमोशंस तलाश रहे हैं, तो दूसरी तरफ ‘तेरा नखरा है झक्कास’ उन्हें थिरकने और मुस्कराने का बहाना दे रहा है।

नई दिल्ली

मनोरंजन

नाना पाटेकर की मौत पर तनुश्री दत्ता के बयान पर विवाद

बॉलीवुड अभिनेता नाना पाटेकर के निधन से फिल्मी दुनिया में शोक का माहौल है। इस बीच अभिनेत्री तनुश्री दत्ता अपने एक बयान को लेकर चर्चा में आ गई हैं। उन्होंने नाना पाटेकर की मौत को ‘ईवल डेड’ बताया, जिसके बाद सोशल मीडिया पर उन्हें ट्रोल किया जा रहा है। अब अभिनेत्री संध्या मुद्गुल ने एक पोस्ट के जरिए पीड़ितों के दर्द और उनके अनुभवों पर बात की है।

संध्या मुद्गुल ने पोस्ट में क्या कहा? संध्या मुद्गुल ने सोशल मीडिया पर एक लंबा पोस्ट साझा किया है। उन्होंने इसमें किसी का नाम नहीं लिया, लेकिन यह पोस्ट ऐसे समय पर आया है, जब तनुश्री दत्ता को लेकर सोशल मीडिया पर चर्चा हो रही है। इसी वजह से लोग संध्या की पोस्ट को नाना पाटेकर और तनुश्री दत्ता से जोड़कर देख रहे हैं।

अपने पोस्ट में संध्या ने लिखा, “किसी व्यक्ति की मौत से उसके किए नुकसान अपने आप खत्म नहीं हो जाते। किसी के चले जाने से उसके दुर्व्यवहार की सच्चाई नहीं बदल जाती। सार्वजनिक रूप से किसी की तारीफ किए जाने से उन लोगों के अनुभव भी कम सच्चे नहीं हो जाते, जिन्होंने उसके व्यवहार से दर्द सहा है।” उन्होंने आगे कहा कि किसी व्यक्ति के लिए दुख

जताने के साथ-साथ उन लोगों के दर्द को याद रखना भी जरूरी है, जो उससे जुड़ी तकलीफों से गुजर रहे हैं। संध्या ने यह भी लिखा कि जब किसी के बारे में सिर्फ अच्छी बातें कहने की इजाजत होती है और पीड़ितों को भुला दिया जाता है, तो उन्हें ऐसा महसूस हो सकता है कि उनकी सच्चाई को एक बार फिर नजरअंदाज कर दिया गया है।

सलमान खान ने लॉन्च किया अपना यूट्यूब चैनल, फैंस के लिए क्या खास?

बॉलीवुड अभिनेता सलमान खान इन दिनों अपनी आने वाली फिल्म ‘मातृभूमि: मे वॉर रेस्ट इन पीस’ को लेकर चर्चा में हैं। अब उन्होंने डिजिटल दुनिया में भी एक नया कदम उठाया है। सलमान खान ने अपना आधिकारिक यूट्यूब चैनल शुरू कर दिया है। इसकी जानकारी उन्होंने सोशल मीडिया पर दी और फैंस को खास अंदाज में बताया कि इस चैनल पर क्या देखने को मिलेगा। सलमान खान ने शुरू किया अपना यूट्यूब चैनल: सलमान खान ने अपने इंस्टाग्राम स्टोरी पर एक वीडियो साझा करके अपने नए यूट्यूब चैनल की जानकारी दी। उन्होंने लिखा, “शुरू से शुरू करते हैं, मेरा आधिकारिक यूट्यूब चैनल। A से Z तक सब यहां मिलेगा।” सलमान के इस ऐलान के बाद उनके फैंस के बीच उत्साह देखने को मिला। फैंस उनके इस नए कदम का स्वागत कर रहे हैं। हालांकि, अभिनेता ने अभी यह साफ नहीं किया है कि चैनल पर किस तरह के वीडियो देखने को मिलेंगे। ‘मातृभूमि’ में सेना के अधिकारी बननेगे सलमान: सलमान खान की आने वाली फिल्मों में ‘मातृभूमि: मे वॉर

रेस्ट इन पीस’ अहम है। यह फिल्म पहले ‘बैटल ऑफ गलवान’ नाम से चर्चा में थी। फिल्म में सलमान भारतीय सेना के एक अधिकारी की भूमिका निभाते नजर आएंगे।

फिल्म को लेकर उनके फैंस काफी उत्साहित हैं। अब देखना होगा कि सलमान अपने नए यूट्यूब चैनल पर फिल्म से जुड़ी कोई खास जानकारी साझा करते हैं या नहीं। नयनतारा के साथ एक्शन फिल्म में भी आएंगे नजर: सलमान खान के पास एक और बड़ी फिल्म है। वह दक्षिण भारतीय निर्देशक वामशी पैडिपल्ली के साथ एक एक्शन फिल्म में काम कर रहे हैं। इस फिल्म में उनके साथ अभिनेत्री नयनतारा भी नजर आएंगी। इस फिल्म की शूटिंग चल रही है। हालांकि, अभी तक फिल्म के आधिकारिक नाम और रिलीज की तारीख का ऐलान नहीं किया गया है।



स्त्री 3 के लिए करना होगा इंतजार!



राजकुमार राव ने बताया कब शुरू होगी शूटिंग

साथ सिर्फ चार लोग रहते हैं और वह अपनी टीम का खर्च निर्माताओं पर डालना पसंद नहीं करते। उनका मानना है कि कलाकार को निर्माता का भी ध्यान रखना चाहिए। राजकुमार राव के साथ रहते हैं सिर्फ चार लोग: राजकुमार राव ने बताया कि उन्हें कभी अपनी टीम छोटी करने की जरूरत नहीं पड़ी, क्योंकि उनके साथ पहले से ही सिर्फ चार लोग रहते हैं। इनमें मेकअप और बालों की देखभाल करने वाले दो लोग, एक सहायक और एक सुरक्षा कर्मचारी शामिल हैं। पिछले पांच साल से उनकी टीम ऐसी ही है। राजकुमार ने कहा, मुझे कभी अपनी टीम छोटी करनी ही नहीं पड़ी। मेरे साथ चार लोग ही रहते हैं, जिनमें मेकअप और हेयर के लिए दो लोग, एक असिस्टेंट और एक सिक्योरिटी से होते हैं। पांच साल से यही है। मुझे लगता है कि कलाकार को निर्माता का एक्टर होना चाहिए। कॉफी और खाने का खर्च भी खुद उठा सकते हैं कलाकार: राजकुमार राव का मानना है कि कलाकारों को अपनी छोटी-छोटी जरूरतों के लिए निर्माताओं पर निर्भर नहीं रहना चाहिए। अगर किसी को कॉफी पीनी है या अपनी पसंद का खाना मंगवाना है, तो वह इसका इंतजाम खुद भी कर सकता है। उन्होंने कहा, किसी चीज को लेकर जबरदस्ती नहीं करनी चाहिए। अगर आप सेट पर हैं तो इतना तो कर ही सकते हैं कि अपनी या अपनी टीम की कॉफी खुद मंगा लो या कहीं का खाना पसंद है तो खुद ऑर्डर कर लो। इसका भार निर्माता पर क्यों डालना?

ट्रोलिंग पर कटरीना का जवाब:दूसरों की सुनेंगे तो आगे नहीं बढ़ पाएंगे

एक्ट्रेस कटरीना कैफ ने डिलीवरी के बाद लुक को लेकर हुई ट्रोलिंग पर जवाब दिया है। उन्होंने ट्रोलिंग से अपनी सेल्फ-वर्थ को बचाकर रखने की सलाह दी है। यूके में अपने कॉस्मेटिक ब्रांड की सालगिरह के कार्यक्रम के दौरान कटरीना ने कहा कि दूसरों की बातों पर ध्यान देने से खुद के फैसले लेने की क्षमता प्रभावित होती है। 43 साल की कटरीना ने कहा कि जिंदगी के हर दौर में खुद को स्वीकार करना जरूरी है। दूसरों की सुनते रहेंगे तो जिंदगी में आगे नहीं बढ़ पाएंगे। कटरीना कैफ का यह बयान उनके पोस्टपार्टम लुक को लेकर सोशल मीडिया पर हुई ट्रोलिंग के एक महीने बाद आया है। हाल ही में मां बनी कटरीना को अंबानी परिवार के गणेश चतुर्थी उत्सव में उनके बड़े हुए वजन के लिए सोशल मीडिया पर ट्रोल किया गया था। ऑनलाइन चल रही बातों को हावी ना होने दें: कटरीना कैफ ने कहा कि सोशल मीडिया पर हर किसी की अपनी राय होती है। ऐसे में ऑनलाइन चल रही बातों को अपने आत्मसम्मान पर हावी नहीं होने देना चाहिए। उन्होंने कहा कि अगर आप हर इंसान की राय के हिसाब से चलने लगेंगे, तो अपने लिए फैसले लेने की क्षमता खो देंगे। उन्होंने यह भी कहा कि कई बार दुनिया आपका जश्न मनाती है और कई बार आपको खुद ही अपना सबसे बड़ा सपोर्टर बनना पड़ता है। ‘दूसरों की सुनने से आगे बढ़ना मुश्किल होगा’ कटरीना ने आगे बताया कि लगातार दूसरों की बातों पर प्रतिक्रिया देने से इंसान खुद को आगे बढ़ाने में असमर्थ महसूस कर सकता है। उन्होंने कहा कि अगर वे हर आलोचना या टिप्पणी को अपने फैसलों पर हावी होने देतीं, तो जिंदगी में आगे नहीं बढ़ पातीं। उनके मुताबिक, आत्मविश्वास और खुद को देखने का जरिया हमेशा एक जैसा नहीं रहता। कुछ दिन बहुत अच्छे होते हैं और कुछ दिनों में खुद को बेहतर महसूस कराने के लिए संघर्ष करना पड़ता है। जिंदगी के हर पड़ाव को स्वीकारना जरूरी: कटरीना कैफ ने इस बात पर जोर दिया कि इंसान को मौजूदा वक्त में अपनी असल पहचान के साथ रहना चाहिए। व्यक्तिगत सुधार और बदलाव एक लगातार चलने वाली प्रक्रिया है।

उन्होंने सलाह दी कि खुद पर जरूरत से ज्यादा दबाव बनाने की बजाय जिंदगी के उतार-चढ़ाव को सामान्य तरीके से स्वीकार करना चाहिए। अपनी भावनाओं और हालातों में आने वाले बदलावों को समझना ही खुद के साथ सहज होना सिखाता है। कटरीना की ट्रोलिंग के बाद भड़के सलमान: टीवी शो ‘बिग बॉस 20’ के दूसरे ‘वीकेंड का वार’ में शनिवार को ट्रोलर्स पर जमकर भड़के थे। सलमान खान ने बॉंड़ी-शेमिंग और एज-शेमिंग पर नाराजगी जताई थी। उन्होंने कहा कि कटरीना को ट्रोल किया गया। उन्हें भी ‘बूढ़ा हो गया’ कहा गया है। इसके बाद सलमान ने बीच शो में अपनी टी-शर्ट उतारकर एक्स दिखाए। नवंबर 2025 में दिया बेटे को जन्म: कटरीना कैफ ने 7 नवंबर 2025 को बेटे को जन्म दिया है। उन्होंने सोशल मीडिया पर इसकी आधिकारिक घोषणा करते हुए लिखा था, ‘हमारी खुशियों का पिटाटा आ गया है। बहुत सारे प्यार आभार के साथ हम अपने बेटे का स्वागत करते हैं। 7 नवंबर 2025। कटरीना और विक्की।’ अब तक कपल ने बेटे की तस्वीर सार्वजनिक नहीं की है। दो सालों से फिल्मों से दूर हैं कटरीना कैफ: कटरीना कैफ को आखिरी बार साल 2024 की फिल्म मैरी क्रिसमस में देखा गया है। फिल्म में उनके साथ विजय सेतुपति लीड रोल में थे। इसके बाद से ही एक्ट्रेस किसी फिल्म में नजर नहीं आई हैं। इस साल भी उनकी कोई फिल्म रिलीज नहीं होगी।



माँ दुर्गा के नौ रूपों की महिमा ‘महोत्सव आदि शक्ति का’



इस नवरात्रि, सोनी पल अपने खास कार्यक्रम ‘महोत्सव आदि शक्ति का’ के माध्यम से दर्शकों को माँ दुर्गा के नौ रूपों की कथाओं, उनकी महिमा और उनसे जुड़े मंदिरों की यात्रा पर ले जाने के लिए तैयार है। 10 एपिसोड्स की यह विशेष सीरीज 11 अक्टूबर को शाम 7:30 बजे शुरू होगी। इसमें देश के अलग-अलग हिस्सों में स्थित उन पवित्र मंदिरों की कहानियाँ बताई जाएँगी, जो माँ दुर्गा के नौ रूपों से जुड़ी हैं।हर एपिसोड में देवी के एक अलग रूप और उससे जुड़े एक नए स्थान की कहानी देखने को मिलेगी। पौराणिक कथाओं, इतिहास, परंपराओं और यात्रा को जोड़ने पर केन्द्रित यह कार्यक्रम हर रूप के महत्व के साथ उन मंदिरों की खासियत भी बताएगा, जहाँ उनकी पूजा की जाती है। ये कहानियाँ और परंपराएँ पीढ़ियों से हमारी संस्कृति का हिस्सा रही हैं।लोकप्रिय अभिनेत्री श्रुति आनंद इस कार्यक्रम की मेजबानी करेंगी। वे दर्शकों को आस्था और खोज के इस सफर पर ले जाएँगी, जहाँ वे माँ दुर्गा के नौ रूपों से जुड़ी कथाओं और मंदिरों के महत्व को करीब से जान सकेंगे। कार्यक्रम में इन मंदिरों तक पहुँचने की व्यावहारिक जानकारी भी दी जाएगी, ताकि जो दर्शक दर्शन के लिए वहाँ जाना चाहें, वे हवाई, रेल या सड़क मार्ग से अपनी यात्रा की योजना बना सकें।सोनी पल के प्रवक्ता ने कहा, “सोनी पल में हमारा प्रयास ऐसा कॉन्टेंट तैयार करना है, जो हमारे दर्शकों से गहराई से जुड़ सके। ‘महोत्सव आदि शक्ति का’ भारत के सबसे खास पर्वों में से एक नवरात्रि के अवसर पर आस्था, संस्कृति, यात्रा और कहानी कहने की परंपरा को साथ लाने का सार्थक माध्यम है।”श्रुति आनंद, ‘महोत्सव आदि शक्ति का’ की होस्ट ने कहा, “महोत्सव आदि शक्ति का शो आस्था, संस्कृति और यात्रा का एक खूबसूरत संगम है। इस विशेष सीरीज के माध्यम से हम माँ दुर्गा के नौ रूपों को जानेंगे और देशभर के मंदिरों से जुड़ी कथाओं और उनके महत्व को दर्शकों तक पहुँचाएँगे। यह सफर मेरे लिए बहुत ही विशेष रहा है, क्योंकि मैं सिर्फ कार्यक्रम की मेजबानी नहीं कर रही, बल्कि दर्शकों के साथ मिलकर इन कहानियों को बारीकी से जान भी रही हूँ। मुझे उम्मीद है कि परिवार इस कार्यक्रम को साथ बैठकर देखेंगे, हमारी संस्कृति के बारे में कुछ नया जानेंगे और शायद इन अद्भुत मंदिरों के दर्शन करने के लिए भी प्रेरित होंगे।”



एक नज़र

उस्मान ख्वाजा ला रहे हैं ऑटोबायोग्राफी, बॉल टैपरिंग कांड पर हो सकते हैं कई और खुलासे

नई दिल्ली। ऑस्ट्रेलिया के पूर्व क्रिकेटर उस्मान ख्वाजा अपनी ऑटोबायोग्राफी लेकर आ रहे हैं। इसके बार में उन्होंने मौजूदा टेस्ट कप्तान पैट कमिंस से भी बात की है। संभावना है कि इस आत्मकथा में उस्मान ख्वाजा 2018 के उस कांड के बारे में भी नए खुलासे कर सकते हैं, जिसमें क्रिकेट ऑस्ट्रेलिया को शर्मसार होना पड़ा था। केपटाउन टेस्ट में साउथ अफ्रीका ने बॉल टैपरिंग की थी। उस टेस्ट में ख्वाजा और कमिंस भी खेल रहे थे। हालांकि, वैन कसान स्टीव स्मिथ, उपकप्तान डेविड वॉर्नर और बॉल टैपरिंग करने वाले कैमरोन बैनक्राफ्ट पर लगा था। पैट कमिंस का मानना है कि टीम उस कांड से मूव ऑन कर चुकी है। क्रिकइंडो के मुताबिक, ख्वाजा की ऑटोबायोग्राफी सब्र 10 नवंबर को रिलीज होगी, जो साउथ अफ्रीका में ऑस्ट्रेलिया की तीन मैचों की टेस्ट सीरीज खत्म होने के तुरंत बाद होगी। कोड स्पोट्स ने गुरुवार को रिपोर्ट किया कि उन्होंने कमिंस को इसके कंटेंट के बारे में बताया था, जो अभी भी सीक्रेट है। अजीब बात है कि ख्वाजा ने किताब के लिए किसी घोस्ट–राइटर का इस्तेमाल नहीं किया। उन्होंने खुद इस किताब को लिखा है। डरबन में साउथ अफ्रीका और ऑस्ट्रेलिया के बीच शुक्रवार से शुरू हो रहे पहले टेस्ट मैच की पूर्व संध्या पर कप्तान पैट कमिंस ने इस बात की पुष्टि की है कि उनकी और ख्वाजा की बात किताब और उसके कंटेंट को लेकर हुई है। उन्होंने जोर देकर कहा कि बॉल–टैपरिंग स्कैंडल के बारे में किसी भी नए खुलासे की संभावना से वे परेशान नहीं हैं, क्योंकि वे पिछले साढ़े आठ सालों में हर सवाल का लाखों बार जवाब दे चुके हैं। कमिंस और ख्वाजा ने साथ में कुल 56 टेस्ट खेले हैं। इनमें से 36 टेस्ट मैचों में कमिंस उनके कप्तान रहे हैं। कमिंस ने कहा, हां, उजी (उस्मान ख्वाजा) ने कुछ हफ्ते पहले मुझे बताया था कि वह एक किताब ला रहे हैं। उन्होंने ज्यादा डिटेल में नहीं बताया। उन्होंने बस मुझे बताया कि वह एक किताब ला रहे हैं। हमेशा की तरह, (मेरा जवाब था), कोई बात नहीं, आप अपनी कहानी बता सकते हैं। इसमें कोई बुराई नहीं है। जब ख्वाजा के साथ उनकी हालिया बातचीत और किताब के बारे में और जानकारी मांगी गई, तो कमिंस ने कहा, मुझे पक्का नहीं पता। आपको उनसे पूछना होगा। जाहिर है, यह बहुत पहले की बात है। सारी जांच और सब कुछ तब किया गया था। मैंने हर सवाल का लाखों बार जवाब दिया। उस पर तब काम हो गया था। मैं बस इतना कह सकता हू कि एक ररूप के तौर पर हम आगे बढ़ चुके हैं। मैं पिछले आठ या नौ सालों से बहुत खुश हूँ, हम एक ररूप के तौर पर कैसे आगे बढ़े हैं और जाहिर है मेरा फोकस क्रिकेट टीम की कप्तानी करने पर है।

स्टीव स्मिथ टेस्ट में सबसे ज्यादा रन बनाने वाले तीसरे ऑस्ट्रेलियाई बने, स्टीव वॉ को पीछे छोड़

नई दिल्ली। ऑस्ट्रेलिया के अनुभवी बल्लेबाज स्टीव स्मिथ ने शुक्रवार को दक्षिण अफ्रीका के खिलाफ पहले टेस्ट मैच में एक बड़ी उपलब्धि हासिल की। वह बड़ी पारी खेलने से चूक गए लेकिन ऑस्ट्रेलिया के लिए टेस्ट में सबसे ज्यादा रन बनाने वाले तीसरे बल्लेबाज बन गए हैं। डरबन में खेले जा रहे मुकाबले में ऑस्ट्रेलिया ने टॉस जीतकर पहले बल्लेबाजी करने का फैसला किया है। हालांकि अफ्रीकी गेंदबाजों के सामने ऑस्ट्रेलियाई बल्लेबाज ज्यादा देर तक टिक नहीं पा रहे हैं और लगातार अंतराल पर विकेट गवा रहे हैं। ऑस्ट्रेलिया के स्टार बल्लेबाज स्टीव स्मिथ ने शुक्रवार को डरबन टेस्ट में चौथे नंबर पर बल्लेबाजी करते हुए 55 गेंद में 25 रन बनाए। उन्होंने अपनी पारी के दौरान दो छक्के लगाए। इस पारी की बदौलत वह ऑस्ट्रेलिया के लिए टेस्ट में सबसे ज्यादा रन बनाने वाले तीसरे बल्लेबाज बने। उन्होंने दिग्गज स्टीव वॉ को इस लिस्ट में पीछे छोड़ा। वॉ ने 168 टेस्ट मैचों में 10,927 रन बनाए थे। वहीं स्मिथ के नाम 126 टेस्ट मैच में 10945 रन हो गए हैं। स्मिथ को अफ्रीका के खिलाफ पहले टेस्ट मैच के दौरान वॉ से आगे जाने के लिए सिर्फ 8 रन की जरूरत थी। उन्होंने मैच में 28वीं गेंद पर आठवां रन बनाते ही ये रिकॉर्ड अपने नाम कर लिया। उन्होंने 28वीं गेंद पर महाराज के खिलाफ छक्का लगाया। अब सिर्फ रिकी पॉटिंग और एलन बॉर्डर इस सूची में स्मिथ से आगे हैं। ऑस्ट्रेलिया के लिए टेस्ट में सबसे ज्यादा रन बनाने का रिकॉर्ड रिकी पॉटिंग के नाम है। उन्होंने 168 टेस्ट में 13,378 रन बनाए हैं, जबकि बॉर्डर के नाम 156 मैचों में 11,174 रन हैं। स्टीव स्मिथ पहले टेस्ट मैच की दूसरी पारी के दौरान टेस्ट में 11000 रन भी पूरे कर सकते हैं। स्मिथ को इसके साथ 55 रनों की जरूरत है। स्मिथ ऑस्ट्रेलिया के लिए टेस्ट में 11000 हजार रन बनाने वाले तीसरे बल्लेबाज बनेंगे। स्मिथ के पास टेस्ट में ऑस्ट्रेलिया के लिए सबसे ज्यादा रन बनाने वाले दूसरे बल्लेबाज बनने का भी मौका है।

तूफानी अर्धशतक से संजू सैमसन ने की विराट कोहली की बराबरी, वेस्टइंडीज के खिलाफ किया कमाल



नई दिल्ली। भारत और वेस्टइंडीज के बीच शुक्रवार को रांची में खेले जा रहे दूसरे टी–20 अंतरराष्ट्रीय मैच में संजू सैमसन ने शानदार बल्लेबाजी करते हुए अर्धशतक जड़ दिया है। उन्होंने वेस्टइंडीज के गेंदबाजों के खिलाफ विकेट के चारों तरफ शॉट्स लगाए हैं। संजू ने मैच की शुरुआत में ऐसी लय पकड़ी की सिर्फ 21 गेंदों का सामना करते हुए ही अर्धशतक जड़ दिया। हालांकि, वे अपने टी–20 अंतरराष्ट्रीय करियर का चौथा शतक जड़ने से चूक गए। संजू ने आज के मुकाबले में 41 गेंदों में 82 रन बनाए जिसमें 9 चौके और चार छक्के शामिल थे। उन्होंने 200 की

स्टाइक रेट से बल्लेबाजी की। इस तूफानी अर्धशतक के साथ उन्होंने विराट कोहली के एक रिकॉर्ड की बराबरी कर ली है। संजू ने इस तूफानी अर्धशतक के साथ विराट कोहली के एक खास रिकॉर्ड की भी बराबरी कर ली है। वे वेस्टइंडीज के खिलाफ भारत के लिए टी–20 अंतरराष्ट्रीय क्रिकेट में संयुक्त रूप से सबसे तेज अर्धशतक जड़ने वाले बल्लेबाज बन गए हैं। इससे पहले विराट कोहली ने यह कारनामा किया था। क्रिकेट के किंग के नाम से मशहूर विराट कोहली ने साल 2019 में वानखेड़े स्टेडियम में 21 गेंदों में ही वेस्टइंडीज टीम के खिलाफ टी–20 अंतरराष्ट्रीय मैच में अर्धशतक जड़ा था,

जो सबसे तेज था, लेकिन अब संजू ने इसकी बराबरी कर ली है। भारत और अफगानिस्तान के बीच तीन मैचों की टी–20 सीरीज के आखिरी मैच में खेली गई अर्धशतकीय पारी के बाद संजू सैमसन का बल्ला पिछली चार पारियों में खामोश रहा था। उन्होंने जापान के एशियन गेम्स में अच्छा प्रदर्शन नहीं किया था। जापान के साथ खेले गए एक अन्य टी–20 मैच और वेस्टइंडीज के खिलाफ पहले टी–20 मैच में भी संजू का बल्ला नहीं चला था। उन्होंने अफगानिस्तान के खिलाफ तीसरे टी–20 मैच में अर्धशतक जड़ने के बाद जापान के खिलाफ 7 गेंदों में 9 रन बनाए थे। इसके बाद श्रीलंका के

रविवार 11 अक्टूबर 2026

खिलाफ एशियन गेम्स के सेमीफाइनल में उनके बल्ले से 9 गेंदों में 7 रन निकले थे। फाइनल में पाकिस्तान के खिलाफ 4 गेंदों में 2 रन ही बना सके थे। इसके बाद भारत में पांच मैचों की टी–20 सीरीज में वेस्टइंडीज के खिलाफ पहले मैच में 9 गेंदों में 11 रन बनाए। लगातार चार मैचों में फेल होने के बाद संजू पर लगातार सवालिया निशान खड़े हो रहे थे। हालांकि, उन्होंने इन सवालों का जवाब अपने बल्ले से दिया है और तूफानी पारी खेली है। अंत में संजू 82 रन बनाकर आउट हुए और उनके टी–20 अंतरराष्ट्रीय करियर में दो साल से शतक ना जड़ पाने का सूखा बना रहा।

संजू सैमसन ने अपने टी–20 अंतरराष्ट्रीय करियर में कुल तीन शतक जड़े हैं। उन्होंने अपने टी–20 अंतरराष्ट्रीय करियर का पहला शतक 12 अक्टूबर 2024 को बांग्लादेश के खिलाफ लगाया था। तब उन्होंने हैदराबाद में खेले गए मैच में 47 गेंदों में 111 रन बनाए थे। इसके बाद टीम इंडिया जब साउथ अफ्रीका के खिलाफ टी–20 सीरीज खेलने गई तब संजू ने 8 नवंबर 2024 को डरबन में 50 गेंदों में 107 रनों की पारी खेली। इसके बाद 15 नवंबर 2024 को इसी सीरीज में 56 गेंदों में 109 रनों की पारी खेली। यह उनके करियर का तीसरा टी–20 अंतरराष्ट्रीय शतक था।

रजत पाटीदार ने बैक-टू-बैक अर्धशतक जड़ा, पर दूसरे बल्लेबाजों का नहीं मिला साथ, भारत ए ऑस्ट्रेलिया ए से हार गया सीरीज

नई दिल्ली। भारत ए और ऑस्ट्रेलिया ए के बीच तीन अनौपचारिक वनडे मैचों की सीरीज का दूसरा मुकाबला, 9 अक्टूबर, शुक्रवार को खेला गया, जहां भारत को एक बार फिर हार का सामना करना पड़ा। तीन मैचों की सीरीज में इंडिया ए दो लगातार मैच हाकर सीरीज गंवा चुका है।ऑस्ट्रेलिया–ए ने 2–0 की अजेय बढ़त बना ली है। भारत ए बनाम ऑस्ट्रेलिया ए की इस सीरीज में टीम इंडिया के सभी बल्लेबाज बुरी तरह फेल हुए हैं लेकिन मध्य प्रदेश की सरजमीं से आने वाले क्रिकेटर रजत पाटीदार ने बैक टू बैक अर्धशतक जड़ दिया है। उनका दूसरे छोर से दोनों मुकाबलों में साथ नहीं मिला जिसके कारण इंडिया ए को दोनों मैचों में हार का मुंह देखना पड़ा। पांडुचेरी में शुक्रवार को हुए इस मैच में एक बार फिर भारत ए की बल्लेबाजी बुरी तरह फेल हुई है। रजत पाटीदार के अलावा किसी भी बल्लेबाज ने ठीक से बैटिंग नहीं की है और 50 का आंकड़ा नहीं पार कर सके। इस सीरीज में ऐसा दूसरी बार हो रहा है। पिछले मुकाबले में भी रजत पाटीदार के अलावा किसी अन्य भारतीय बल्लेबाज का बल्ला नहीं गरजा था। उस मैच में भी सिर्फ रजत पाटीदार ने ही अर्धशतकीय पारी खेली थी। मुकाबले में उनके अलावा दूसरा सार्वाधिक स्कोर निशांत सिंधु का था, जिन्होंने 43 गेंदों में 31 रनों की पारी खेली थी। 6 अक्टूबर को खेले गए पहले मुकाबले में रजत पाटीदार ने मुश्किल



परिस्थितियों में 51 गेंदों में 53 रनों की पारी खेली थी। इस मैच में उन्होंने अपने बल्ले से 5 शानदार चौके और एक छक्का जड़ा था। इस दौरान उनका स्ट्राइक रेट 103.92 का था। बता दें कि इस मैच में साई सुदर्शन 1, प्रभसिमरन सिंह 17, कप्तान ऋराज गायकवाड़ 15, देवदत्त पंडिक्कल शून्य, सूर्याश शेंडगे 3, विप्रज निगम 13, अनुकूल रॉय 5 और अरशद खान में उनके अलावा दूसरा सर्वाधिक स्कोर निशांत सिंधु का था, जिन्होंने 43 गेंदों में 31 रनों की पारी खेली थी। 6 अक्टूबर को खेले गए पहले मुकाबले में रजत पाटीदार ने मुश्किल

टीम को ऑस्ट्रेलिया ए के हाथों 125 रनों से विशाल हार का सामना करना पड़ा था। 9 अक्टूबर को पांडुचेरी में शुरू हुए दूसरे मुकाबले में उम्मीद थी कि भारतीय टीम अच्छा प्रदर्शन करेगी लेकिन एक बार फिर रजत पाटीदार के अलावा अन्य बल्लेबाजों ने प्रशंसकों और टीम मैनेजमेंट को बुरी तरह से निराश किया। शुक्रवार को सुबह 9 बजे से शुरू हुए मुकाबले में ऑस्ट्रेलिया ए की टीम ने पहले बल्लेबाजी करते हुए 49.5 ओवर में 275 रन बनाए। 276 रनों के लक्ष्य का पीछा करते हुए टीम इंडिया की बैटिंग लाइन–अप 45.2 ओवर में

विराट कोहली को कप्तानी से हटाने वाली थी आरसीबी, पार्थिव पटेल थे दावेदार; मगर इन पर गिर गई गाज

नई दिल्ली। पूर्व भारतीय क्रिकेटर और रॉयल चैलेंजर्स बेंगलुरु यानी आरसीबी के लिए खेलने वाले पार्थिव पटेल ने इस बात की पुष्टि की है कि यह बात सही थी कि आरसीबी एक समय पर विराट कोहली को कप्तानी से हटाने वाली थी। यही बयान इंग्लैंड के पूर्व ऑलराउंडर मोइन अली ने दिया था, जो सही था। पार्थिव ने यह भी बताया है कि उन्हें आरसीबी का कप्तान बनाया जा रहा था, लेकिन अगले साल कोई बदलाव लीडरशिप में नहीं हुआ। यहां तक कि उस शर्क्स को ही बाहर कर दिया था, जिन्होंने पार्थिव को कप्तानी ऑफर की थी। पार्थिव भी अगले सीजन में एक भी मैच नहीं खेले थे। पार्थिव पटेल ने पूर्व क्रिकेटर आकाश चोपड़ा के साथ किए गए पॉइकास्ट में बताया कि आशीष नेहरा और गैरी कर्स्टन ने उन्हें बताया था कि वह कप्तान के तौर पर विराट की जगह लेंगे। नेहरा 2018 और 2019 में आरसीबी के बॉलिंग कोच थे,

जबकि गैरी कर्स्टन हेड कोच थे। 2019 सीजन में RCB पॉइंट्स टेबल में सबसे नीचे रही थी और ऐसे में दोनों को उनके पदों से हटा दिया गया था। 2020 के कैप्टेन से माइक हेसन और साइमन केटिच ने चार्ज संभाला और फिर सब कुछ बदल गया। पार्थिव ने बताया कि मोइन अली भी कप्तानी के रेंस में थे, लेकिन वह इस रेंस को जीते थे। पार्थिव ने इस बातचीत में बताया, मैंने इस बारे में कभी बात नहीं की, लेकिन मोइन अली ने एक इंटरव्यू में इसका जिक्र किया था– मुझे बताया गया था, तैयार रहो, हम अगले साल के लिए इस बारे में सोच रहे हैं, लेकिन अगले साल, जिन दो लोगों ने मुझे यह ऑफर दिया था (आशीष नेहरा और गैरी कर्स्टन) उन्हें बदल दिया गया, नए कोच आ गए, और मुझे उस पूरे सीजन में एक भी मैच खेलने को नहीं मिला। वाकई मैं 2020 में पार्थिव पटेल को एक भी मैच खेलने को नहीं मिला था।

फर्स्ट क्लास क्रिकेट में बनाए 10000 से ज्यादा रन, और अब कर दिया रिटायरमेंट का ऐलान

नई दिल्ली। न्यूजीलैंड के एक क्रिकेटर ने प्रोफेशनल क्रिकेट से रिटायरमेंट का ऐलान कर दिया है। ये क्रिकेटर भारत के पूर्व विकेटकीपर बल्लेबाज पार्थिव पटेल के साथ स्कूल स्तर की क्रिकेट में ओपनिंग भी कर चुका है, क्योंकि यह भारत में ही जन्मा था। गुजरात में जन्मे जीत रावल ने क्रिकेट की दुनिया को अलविदा कह दिया है। 2016 से 2020 तक उन्होंने न्यूजीलैंड के लिए 24 टेस्ट मैच खेले थे। इससे पहले और इसके बाद वह न्यूजीलैंड में लगातार डोमेस्टिक क्रिकेट खेल रहे थे, लेकिन अब उन्होंने प्रोफेशनल क्रिकेट से रिटायरमेंट की घोषणा नए सीजन से पहले कर दी है। जीत रावल ने नॉर्दर्न डिस्ट्रिक्ट्स क्रिकेट एसोसिएशन से कहा, यह मेरे लिए बहुत सम्मान और खुशी की बात है कि मैंने यह फैसला किया है। मैं शांति और बहुत खुश महसूस कर रहा हूं। बचपन का सपना (जाहिर है) ब्लेक कैप्स



(न्यूजीलैंड क्रिकेट टीम) के लिए खेलना था और मैं गर्व के साथ पीछे मुड़कर देखा हूं। यह सिर्फ मेरा सपना नहीं था, बल्कि मेरे पिता का भी सपना था। हमने एक मौका देखा और उन्होंने परिवार को यहां शिफ्ट कर दिया, ताकि मुझे अपना सपना जीने का मौका मिल सके। सितंबर में 38 साल के हुए जीत रावल ने दिसंबर 2008 में प्रोफेशनल क्रिकेट में डेब्यू किया था और अब अपने करियर को 18 साल

के बाद विराम दिया है। उन्होंने अपनी टैनएज में गुजरात से ऑकलैंड आने के बाद ऑकलैंड के लिए वेस्टइंडीज की टीम के खिलाफ अपना फर्स्ट क्लास डेब्यू किया था। आपको जानकर हैरानी होगी कि वे पार्थिव पटेल के साथ ओपनिंग कर चुके हैं। अहमदाबाद के विद्यानगर स्कूल के लिए दोनों खिलाड़ी खेलते थे। उस समय जीत रावल के ओपनिंग पार्टनर पार्थिव पटेल थे। हालांकि, न्यूजीलैंड जाने

के बाद उन्होंने ऑकलैंड के लिए मिडिल ऑर्डर में शुरुआत की, लेकिन बाद में वे न्यूजीलैंड के घरेलू क्रिकेट में सबसे सफल ओपनर में से एक बन गए। उन्होंने अपनी 292 फर्स्ट क्लास पारियों में से 285 में ओपनिंग की, और 37.36 की औसत से 10127 रन बनाए, जिसमें उस पोजीशन पर 23 शतक भी शामिल हैं। पिछले साल दिसंबर में वह 10 हजार रन बनाने वाले बल्लेबाज फर्स्ट क्लास क्रिकेट में बने थे। नॉर्दन डिस्ट्रिक्ट्स की कप्तानी भी उन्होंने की। आखिरी मैच उन्होंने इस साल की शुरुआत में मार्व में खेला था। वे प्लंकेंट शील्ड में सेंट्रल डिस्ट्रिक्ट्स के खिलाफ उतरे थे। कुल मिलाकर जीत रावल ने चार दिन के प्लंकेंट शील्ड में 8662 रन बनाए। इस कॉम्पिटिशन के इतिहास में रावल से ज्यादा रन सिर्फ माइकल पैप्स (11,463), मैथ्यू सिक्लेयर (8842), और पीटर फ्लूटन (8719) ने बनाए हैं।

रणजी ट्रॉफी के पहले मैच से बाहर रहेगी अरुणाचल प्रदेश की टीम कोर्ट केस और गुटबाजी ने बिगाड़ा खेल

इटानगर। रणजी ट्रॉफी 2026–27 के सत्र से पहले अरुणाचल प्रदेश की टीम अजीब उलझन में है। अरुणाचल के खिलाड़ियों को पता ही नहीं है कि उन्हें पहले मैच में उतरना है या नहीं। अगर उतरना भी है तो कौन–कौन मैच खेलेगा? अरुणाचल प्रदेश की टीम को 11 अक्टूबर से अहमदाबाद में नगालैंड के खिलाफ रणजी ट्रॉफी के प्लेट ररूप के मुकाबले में खेलना है, लेकिन टीम पर शुरुआती मुकाबले में नहीं उतर पाने का खतरा मंडरा रहा है। इसके पीछे का कारण यह है कि राज्य क्रिकेट संघ में कुछ भी ठीक नहीं चल रहा है। इसका नुकसान वहां के क्रिकेटरों को उठाना पड़ रहा है। दरअसल, अरुणाचल प्रदेश क्रिकेट संघ में इस समय गुटबाजी चल रही है और हाई कोर्ट की इटानगर पीठ में संघ से जुड़ा मामला लंबित है। ऐसे में टीम के पहले मैच में नहीं खेलने जैसी स्थिति पैदा हो गई है। अरुणाचल प्रदेश की टीम से बृहस्पतिवार को भुवनेश्वर में सिक्किम के खिलाफ वीनू मांकड ट्रॉफी के एकदिवसीय मुकाबले के लिए अपनी अंडर–19 टीम भी मैदान में नहीं उतार सकी। फिलहाल संघ में ऐसा कोई व्यक्ति नहीं है जो चयन से जुड़े मामलों पर फैसला ले सके। पता चला है कि इस सत्र में राज्य का

प्रतिनिधित्व करने के लिए अनुबधित पेशेवर खिलाड़ी भी असमंजस में हैं और उन्हें अब तक यह जानकारी नहीं दी गई है कि रणजी ट्रॉफी के शुरुआती मुकाबले के लिए उन्हें अहमदाबाद पहुंचना है या नहीं। अरुणाचल प्रेदेश क्रिकेट संघ ने सितंबर में चुनाव कराया था, जिसमें नबाम विवेक को अध्यक्ष चुना गया। हालांकि कई जिला क्रिकेट संघों ने चुनाव में कथित अनियमितताओं का आरोप लगाते हुए गुवाहाटी उच्च न्यायालय की इटानगर पीठ का रुख किया। हाई कोर्ट ने अपना आदेश सुरक्षित रख लिया है। इस बीच बीसीसीआई भी फिलहाल स्वतंत्र चयन समिति का गठन नहीं कर सकता जैसा उसने बिहार के मामले में किया था। बिहार में पहले दो रणजी मैचों के लिए बीसीसीआई का परीवेक्षकों के नेतृत्व में टीम चुनी गई है, जबकि अरुणाचल का मामला अचलत में विचारधीन हैं। इस कारण चुनाव जीतने वाले नबाम विवेक से संपर्क नहीं हो सका। ऐसे में अरुणाचल प्रदेश के खिलाड़ी जल्द शुरू होने वाले इस मैच के लिए शायद पूरी तरह से तैयार भी नहीं होंगे, क्योंकि किसी को कुछ पता ही नहीं है कि उनका सिलेक्शन कौन करेगा और कैसे वह अहमदाबाद में जाकर मुकाबला खेलेंगे।

टीम इंडिया के खिलाफ टी20 सीरीज से पहले न्यूजीलैंड को लगे 2 बड़े झटके, ये टॉप प्लेयर हुए टीम से बाहर

नई दिल्ली। टीम इंडिया के खिलाफ 22 अक्टूबर से शुरू हो रही 5 मैचों की टी20 इंटरनैशनल सीरीज से पहले मेजबान न्यूजीलैंड की टीम को डबल झटका लगा है। दो टॉप प्लेयर इस बड़ी टी20 सीरीज से बाहर हो गए हैं। मार्क चैपमैन और जैक फाउलक्स हिप के कारण इस सीरीज को मिस करने वाले हैं। चैपमैन हैमस्ट्रिंग इंजरी का शिकार हुए हैं, जबकि जैक हिप प्लेक्सर के कारण टी20 सीरीज में नहीं खेलेंगे। इन दोनों खिलाड़ियों की जगह इस सीरीज में कौन खेलेगा इसका ऐलान भी न्यूजीलैंड क्रिकेट बोर्ड ने कर दिया है। दो अनुभवी खिलाड़ियों को टीम में शामिल

किया गया है। पिछले महीने यूरोप में एक टी20 लीग में खेलते समय मार्क चैपमैन को हैमस्ट्रिंग में चोट लग गई थी और वह भारत के खिलाफ ODI सीरीज में वापसी करने के इरादे से पूरी पांच मैचों की टी20 सीरीज से बाहर रहेगे, जबकि जैक फाउल्क्स हिप प्लेक्सर की शिकायत से जूझ रहे हैं और उनके खेलने के लिए वापसी की टाइमलाइन अभी तय नहीं हुई है। इन दोनों खिलाड़ियों के चोटिल होने की वजह से ऑलराउंडर जोश क्लार्कसन और तेज गेंदबाज ब्लेयर टिकनर को 22 अक्टूबर से क्राइस्टचर्च में शुरू होने वाली सीरीज के लिए न्यूजीलैंड की 16 सदस्यों वाली

टीम में शामिल किया गया है। न्यूजीलैंड की टीम के हेड कोच रॉब वाट्लर इन दोनों खिलाड़ियों को भारत के खिलाफ अहम सीरीज से पहले अपने प्लेइंग ररूप में स्वागत करने के लिए उत्सुक हैं। वॉल्टर ने कहा, मैं मार्क और जैक के लिए दुखी हूं और मैं उन दोनों के जल्दी लौटने की दुआ करता हूँ, लेकिन हम खुशकिस्मत हैं कि हमें जोश और ब्लेयर की एक्सपटीज का फायदा मिलेगा। मुझे पता है कि वे दोनों इस जबरदस्त T20 सीरीज में शामिल होने के लिए बहुत उत्साहित हैं। दोनों टीमों का आमना–सामना इससे पहले टी20 वर्ल्ड कप के फाइनल में हुआ था, जहां भारत ने 96 रनों से कीवी

टीम को हराया था और लगातार दूसरा खिताब जीता था। मिचेल सेंटरन (कप्तान), जॉन एलन, माइकल ब्रेसवेल, जोश क्लार्कसन, डेवोन कॉर्नेल, जैकब डूकी, लॉकी फर्ग्यूसन, मेट हेनरी, बेवोन जैकब्स, काइल जैमीसन, एडम मिल्ने, डेरिल मिचेल, ग्लेन फिलिप्स, टिम स्कॉट, नाथन स्मिथ और ब्लेयर टिकनर न्यूजीलैंड वर्ल्स इंडिया टी20 सीरीज का शेड्यूल पहला टी20 22 अक्टूबर, क्राइस्टचर्च दूसरा टी20 24 अक्टूबर, क्राइस्टचर्च तीसरा टी20 27 अक्टूबर, वेलिंगटन चौथा टी20 30 अक्टूबर, ऑकलैंड पांचवां टी20 1 नवंबर, हैमिल्टन

पाकिस्तान के नए कप्तान बने साहिबजादा फरहान, बोले- उत्साहित हूं, मगर मुझ पर दबाव भी है

नई दिल्ली। साहिबजादा फरहान अब पाकिस्तान की टी20 टीम के फुलटाइम केप्टन बना दिए गए हैं। एशियन गेम्स 2026 में भी वे टीम के कप्तान थे, जहां उन्हें फाइनल में भारत से हार मिली थी। एशियन गेम्स के लिए पाकिस्तान की प्रमुख टीम नहीं गई थी, लेकिन अब उन्हें मुख्य टीम दे दी गई और आधिकारिक तौर पर इस बात की घोषणा पाकिस्तान क्रिकेट बोर्ड की ओर से कर दी गई है कि वे सलमान अली आगा को कप्तान के तौर पर रिप्लेस करेंगे। इसको लेकर फरहान ने कहा है कि वह इसके लिए उत्साहित हैं, लेकिन दबाव भी महसूस कर रहे हैं। श्रीलंका के खिलाफ पहले टी20 से एक दिन पहले मीडियां से बात करते हुए साहिबजादा फरहान ने कहा, पहली बार किसी घरेलू सीरीज में पाकिस्तान की कप्तानी करना सम्मान की बात है, इसलिए मैं बहुत उत्साहित हूं। हालांकि, उन्होंने इस बात को भी माना कि कप्तानी से प्रेशर आता है। उन्होंने कहा, जाहिर है, कप्तानी का प्रेशर होता है, क्योंकि आप टीम को लीड कर रहे होते हैं और आपको एक अलग माइंडसेट दिखाना होता है। मैंने पहले की डोमेस्टिक क्रिकेट में कप्तानी की है, इसलिए मैं सारा टीम को लीड करने का आइडिया है। फरहान ने कहा है कि उन्होंने कभी नहीं सोचा था कि वे पाकिस्तान की टीम के कप्तान भी बनेंगे। उन्होंने कहा, मैंने कभी खुद को पाकिस्तान का कप्तान बनते हुए नहीं सोचा था। अपने पिता की दुआओं को याद करते हुए फरहान पर बहुत मदद मिलेगी। नए–नए कप्तान बने फरहान चाहते हैं कि पाकिस्तान की टीम टी20 क्रिकेट में अटैकिंग क्रिकेट खेले। कप्तान ने कहा है, हम टी20 माइंडसेट दिखाना चाहते हैं।